ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जून-२०२२

जून-२०२२ ◆ वर्ष ११ ◆ अंक ०२ ◆ उदयपुर

ऋतुओं का नियमों में आना,
चमत्कार क्योंकर होता ?
सूर्योदय और सूर्यास्त भी,
निश्चित पल पर क्यों होता ?
दयानन्द बतलाते हमको,
प्रभु नियमन में होता।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५

१२८

एम डी एच मसालों की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता के 101 साल, बेमिसाल !

1919·CELEBRATING·2019

1919•शताब्दी उत्सव•2019

Years of affinity till infinity

आत्मीयता अनन्त तक

MDH मसालों में 101 साल की शुद्धता के उत्सव पर

अपने सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई

भारत सरकार ने व्यापार और उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण (Trade & Industry, Food Processing) में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए महाशय जी को पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत किया गया।

भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया। यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया। "Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।

The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2020 तक लगातार 6 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand & India's Most Attractive Brands का स्थान दिया है।

MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच–सच

महाशय धर्मपाल जी ने सियालकोट (पाकिस्तान) से आकर कठिन परिस्थितियों और संघर्ष से अपने जीवन को संवारा है और बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये अपने व्यवसाय को समर्पित किया है। अधिक जानने के लिये YouTube Channel पर Mahashay Dharampal Gulati टाईप करें और देखें।

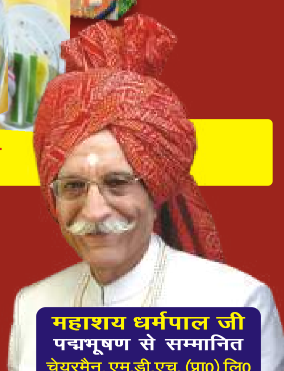

महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित
चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा0) लि0

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२२
ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी
विक्रम संवत् २०७९
दयानन्दाब्द १९८

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

June - 2022

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २८

हलचल २९

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थ मित्र बनें
१०	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/२२
११	देवं वहन्ति केतव:
१४	सुखी परिवार-सुख का आधार
१७	ईश्वर मनुष्यादि प्राणियों ....
२०	संवेदनशीलता के सिद्धान्त
२६	स्वास्थ्य- मुँह सूखने की समस्या
२७	कथा सरित- याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी
३०	ईश्वर और ईश्वरकृत पुस्तक......

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ११ अंक -०२

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

श्रद्धा से परमात्माग्नि का ध्यान

ओं अग्निमिन्धानो मनसा धियꣳ सचेत मर्त्यः।
अग्निमिन्धे विवस्वभिः।। - सामवेद पू.१/१/२/६

अग्निम् इन्धानः मनसा धियम सचेत मर्त्यः।

हे परमेश्वर! मनसा= मन से विचार पूर्वक-अग्निम्-इन्धानः= तेरी अग्निरूप वाणी का ज्ञान प्राप्त कर सभी कर्म करते हुये तुझे विवस्वभिः= सूर्य का किरणों के समान अपने हृदय पटल, मन मस्तिष्क में धारण करें।

प्रस्तुत मंत्र में तीन बातों पर चर्चा की गई है-

१. श्रद्धा पूर्वक ध्यान
२. ध्याने/उपासने का उचित समय और
३. कर्म का सेवन। फल।

अग्निमिन्धानोः- (अग्निम्+इन्धानः) अर्थात् (मनसा) मन से। हृदय से (अग्निम्) हृदय में छिपे परमात्मा रूप अग्नि का ध्यान अर्थात् उस अग्निरूप वाणी का ज्ञान प्राप्त करना। कहने का अभिप्राय यह है कि साधक ज्ञान पूर्वक कर्मों द्वारा (कर्म करते हुये) मनसा= मन से/श्रद्धा से उस प्रभु के स्वरूप का चिन्तन करते हुए अपने नित्य कर्मों का संचालन करें। कर्म तो हर मनुष्य को करने ही पड़ेंगे, उनके बिना सम्पादन के यह मनुष्य रूपी चोला/शरीर आगे चल ही नहीं सकता। तो क्यों न हम इन

(क) कर्मों का सम्पादन सत्य पर चलते हुये अर्थात् सचेत रहते हुए ही ज्ञान पूर्वक (विवस्वभिः)= अज्ञान अर्थात् सभी अन्धकार को विध्वस्त/परास्त करते हुये बुद्धि पूर्वक सोचकर ही करें। क्योंकि 'विचार और बुद्धि' की शक्ति केवल मनुष्य के पास ही है, पशुओं में इसकी क्षमता नहीं।

(ख) (अग्निम् इन्धे): श्रद्धा पूर्वक चिन्तन से ही वह परमात्मग्नि (इन्धे) प्रदीप्त होती है- अर्थात् उसे हृदय में अनुभूति निश्चित है।

(ग) न्यायदर्शन १/२- विधि और निषेध, देय तथा उपादेय आदि की व्यवस्था मनुष्य के लिए ही है। पशु में इतनी क्षमता नहीं, क्योंकि वह स्थूल रूप से देखकर ही प्रवृत्त होने वाला प्राणी है। 'जो किसी वस्तु को देखकर 'ग्राह्य व त्याज्य' का विवेक न कर सके, उसे पशु कहते हैं।' यदि मनुष्य भी विवेक से कर्म न करे तो उसमें और पशु में अन्तर ही क्या हुआ। वैसे तो खाना-सोना-डरना और मैथुन (रति क्रिया) चारों बातें मनुष्य और पशु में समान हैं। पर पशु के स्वाभाविक गुण हैं और मनुष्य में नैमित्तिक गुण।

(१) पशुओं का 'आहार' नियमित और मर्यादित है। शेर केवल मांस ही खाता है। गाय घास फूंस (वैज) ही खाती है, और मूर्ख गधा भी केवल घास ही खाता है। पर मनुष्य में 'नैमित्तिक गुण' होने पर भी जो मिले सब कुछ चट कर जाता है।

(२) निद्रा- का भी पशुओं में एक निश्चित समय है। जैसे मुर्गा सूर्यादय से पूर्व ही बांग देता है। मोर ब्रह्ममुहूर्त में मानो मधुर स्वर में प्रभु को याद कर रहा हो। पर अफसोस कि मनुष्य तो भौतिकता के चक्कर में आधी रात से पहले सोता ही नहीं और प्रातः ६-१० बजे उठता है।

(३) भय- पशु भय से डरते है और कारण दूर होते ही निश्चिन्त हो जाते हैं। पर मनुष्य तो वर्षों बाद भी आने वाले 'भय' की चिन्ता डूबा रहता है।

(४) मैथुन- पशुओं में ऋतु गमन का समय भी निश्चित होता है। वह नर और मादा साथ-साथ रहते हुये भी 'काम' के वशीभूत नहीं होते। पर वाह रे मनुष्य तू तो भौतिकवाद की चकाचौंध में हर समय 'काम' के वशीभूत रहता है।

(घ) 'मनसा धियं सचेतः'- महर्षि कणाद के शब्दों में श्रद्धापूर्वक 'मन' से ही ईश्वर-चिन्तन अर्थात् ध्यान करो। बिना भावों के

चिन्तन का कोई अर्थ नहीं। 'श्रद्धा और सत्य' का परस्पर गहरा सम्बन्ध है।

(१) पहला ज्ञान/विवेक द्वारा सत्य को जान उसे निज के आचरण में धारण करे और सश्रद्ध भावों से प्रभु में मग्न/तल्लीन होकर उसे जानने का प्रयास करें तो निश्चित मानें के हम तीनों दुःखों से (आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक) छुटकारा पाने में सफल होंगे।

(ड.) 'तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय':- अर्थात् इन तीनों दुःखों से छुटकारा प्रभु के साक्षात्कार (अर्थात् हृदय में प्रभु की अनुभूति) से ही सम्भव है।

२. (इन्धानः धियं)- मन से प्रभु का चिन्तन कैसे करें ! उसका स्वरूप क्या है! आदि प्रश्न हैं। (धियं)= ज्ञानपूर्वक कर्म का सेवन जीवन के व्यवहारों में निरन्तर करने से 'चिन्तन' में शनैः-शनैः एकाग्रता आ जाती है। इसका एकमात्र उपाय प्रातः ब्रह्ममुहूर्त का समय ही सबसे उत्तम और उपर्युक्त है। 'करत-करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान' की कहावत यहाँ सटीक सिद्ध होती है। सो प्राणायाम साधना के बाद ओंकार उपासना के द्वारा उस प्रभु का चिन्तन, उसके गुण-कर्म-स्वभाव को जानना उसका अर्थ सहित चिन्तन और व्यवहार में निरन्तर प्रयोग करने से हृदय पटल की सारी पार्शें खुल जाती हैं। और फलस्वरूप स्वतः ही सत्संग और परसेवा भी जीवन का अभिन्न अंग बनता जावेगा। (विवस्वभिः)= ज्ञानियों का नित्य संग अर्थात् उनमें सत्संग और परिचर्चा द्वारा ज्ञान (इन्धे)= को हम दीप्त करें। अर्थात् हम स्वाध्याय सत्संग, शंका, समाधान और चिन्तन द्वारा विशिष्ट ज्ञानियों के साथ सम्पर्क रखते हुये 'प्रकृष्ट' सम्बन्ध वाले बनें और इस ईश्वर के स्वरूप को श्रद्धा भावों से पहचानें।

(ख) ''उपह्वरे गिरीणाँ सङ्गमे च नदीनाम् ।धिया विप्रोऽअजायत्।।' ' य.२६/१५ इस मंत्र में स्पष्ट सन्देश है कि हम गुरुओं का सान्निध्य, स्तोताओं की संगत और स्वाध्याय से अपनी न्यूनताओं को निरन्तर दूर करते हुये मन में श्रद्धा द्वारा उसका चिन्तन अवश्य करें। निश्चित मानो शान्ति के बीज प्रस्फुटित होने लगेंगे।

३. मर्त्य- यहाँ मंत्र में 'मर्त्य' शब्द आया है। इसका अर्थ है कि मनुष्य मरणधर्मी है, न जाने कब मृत्यु के आगोश में आ जावे। इसलिये जैसे वह यज्ञ कर्म के लिए अग्नि को प्रज्वलित करता है, वैसे ही उसे इसी जन्म में (अर्थात् मनुष्य योनि में ही) योग माध्यम से प्राण-साधना द्वारा हृदय में उस परमात्मा को प्रकाशित करने का निरन्तर प्रयास कर समाज सेवा एवं परोपकारी कर्मों को करते हुए ही सौ वर्ष जीने की दृढ़ इच्छा करे। - य. ४०/२

'ज्ञान-कर्म-उपासना'- तीनों में ज्ञान और कर्म का तो आज बहुतायत में बोल बाला है। यह ज्ञान और कर्म केवल आधिभौतिक सुखों की प्राप्ति पर ही टिक गया है, और हम प्राणी विषयों में इतना धंसते व फंसते जा रहे हैं कि हमारे पास स्वयं के लिए, परिवार के लिए वक्त ही नहीं है। संस्कृत के कवि ने ठीक ही कहा है- 'विष से विषय कहीं अधिक भंयकर है। विष तो खाने पर ही मारता है, किन्तु 'विषय' तो स्मरण मात्र से ही विनाश कर देता है।'

महर्षि पतंजलि के शब्दों में- 'जब तक हम दृढ़ भूमि कर साधना-भजन-चिन्तन और मनन आदि बाहरी सभी विषयों के बिना नहीं करेगें- (अर्थात् आडम्बरों की परवाह किए बिना) हम यूँ ही जन्म-जन्मान्तरों तक भटकते रहेंगे।'

हे प्रभो! यही प्रार्थना करते हैं हम, ब्रह्ममुहूर्त में प्राण साधना और श्रद्धा भावों से ध्यान आपका ही धरते हैं।

हे जगदीश! शुभ इच्छायें सभी हमारी पूर्ण करो, सत्य कर्मों से कर्मशील नित्य तेरी उपासना ही हम करते हैं।।

- जीवन लाल आर्य
अशोक विहार, दिल्ली

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर
बैंक एकाउन्ट का विवरण :
AC. No. : 310102010041518,
IFSC CODE- UBIN 0531014,
MICR CODE- 313026001
में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

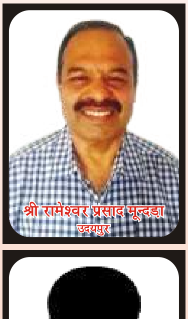
श्री रामेश्वर प्रसाद मून्दड़ा
उदयपुर

श्री पद्मनाभ आर्य
राउरकेला

श्री अमित गोयल
निमच्छ

डॉ. प्रशान्त अग्रवाल
उदयपुर

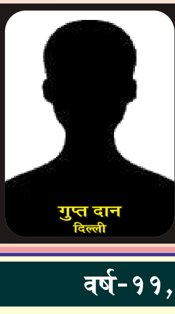
गुप्त दान
दिल्ली

श्री सुभाष गुप्ता
अहमदाबाद

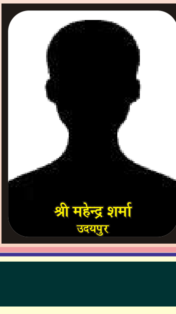
श्री महेन्द्र शर्मा
उदयपुर

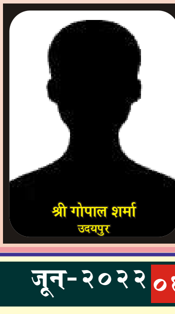
श्री गोपाल शर्मा
उदयपुर

आत्म निवेदन

निजाम और धर्मनिरपेक्षता

राजनीति की तलवार क्या इतिहास को कुंद कर सकती है? बयान तो कुछ भी दिए जा सकते हैं परन्तु इतिहास में दर्ज काले कारनामे के धब्बे मिटाए नहीं जा सकते। क्या ही आश्चर्य है आजकल बात चल पड़ी है कि हैदराबाद के नबाब मीर उस्मान अली धर्मनिरपेक्ष थे अर्थात् निजाम शाही में हिन्दू मुस्लिम सभी से सामान व्यवहार होता था। स्वामी जी की शब्दावली का प्रयोग करें तो यह ऐसी ही बात है जैसे कोई कहे कि उसने बंध्या के पुत्र होते देखा है। क्या निजामशाही में हुए एकपक्षीय अत्याचारों और खूंखार रजाकारों के दुष्कर्मों को कोई भुला सकता है? एक राजनेता के बयान से उत्साहित नबाब के पौत्र नजफ अली खान का कहना है कि 'मेरे दादा ने सभी धर्मों का सम्मान किया और अपने शासनकाल में उन्हें एकजुट किया। शान्ति और धर्मनिरपेक्षता उनके शासन के अहम अंग थे।

अब और लोग भी मानो जाग गए। उन्हें मानवता के लिए वरदान मानते हुए विश्व शान्ति से जोड़ा जाने लगा और लिखा जाने लगा 'उन्होंने धर्म और राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना मानवता की अनुकरणीय सेवा की। वे हिन्दू और मुस्लिम को अपनी दो आँखें मानते थे।

नवाब नजफ अली खान ने नबाब उस्मान अली की दानशीलता के बारे में लिखा कि हैदराबाद से मक्का और मदीना को करीब ५० साल तक फंड मुहैया कराया गया। उन्होंने कहा कि हज और उमराह तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए सऊदी अरब में ४२ रबतों का निर्माण किया गया था। अब यहाँ प्रश्न किया जा सकता है कि अगर हिन्दू मुस्लिम उनकी दो आँखें थीं तो किस हिन्दू तीर्थ की उन्होंने लगातार वित्तीय मदद की? नबाब साहब पाश्चात्य रंग में रंगे थे, माना उनके परिवार की महिलायें उस समय में भी हिजाब अथवा पर्दा नहीं करतीं थीं और हैदराबाद के विकास में उनका योगदान उल्लेखनीय है, पर इस सब से उनके निजाम में हिन्दुओं पर अकारण अवैध प्रकार से जो अकल्पनीय अत्याचार किये वह सब धुल नहीं जाता। और यह भी ध्यान रखें कि फैशन में भले ही उन्होंने पाश्चात्य अनुकरण किया हो परन्तु परिवार विस्तार में उन्होंने इस्लामिक परम्परा का अनुकरण किया था। बताया जाता है कि नवाब मीर उस्मान अली खान के १८ बेटे और १६ बेटियाँ थीं।

रजाकारों का क्रूर संगठन उनके निजाम में, जिनमें दुर्दांत अपराधी सम्मिलित थे अपनी क्रूरता की पराकाष्ठा पर पहुँच चुका था पुलिस तथा फौज उनकी सहयोगी ही थी।

और सब कुछ छोड़ भी दिया जाय तो भी निजामशाही में आर्य समाजियों पर जो क्रूर अत्याचार किये वे नबाब साहब की धर्मनिरपेक्षता की पोल खोलने के लिए काफी हैं। ध्यान रखें कि यही नबाब हैदराबाद का विलय पाकिस्तान में करना चाहते थे,

न कि भारत में। अगर सरदार बल्लभ भाई पटेल और आर्यसमाजियों का बलिदान न होता तो हैदराबाद भारत का अंग न होता।

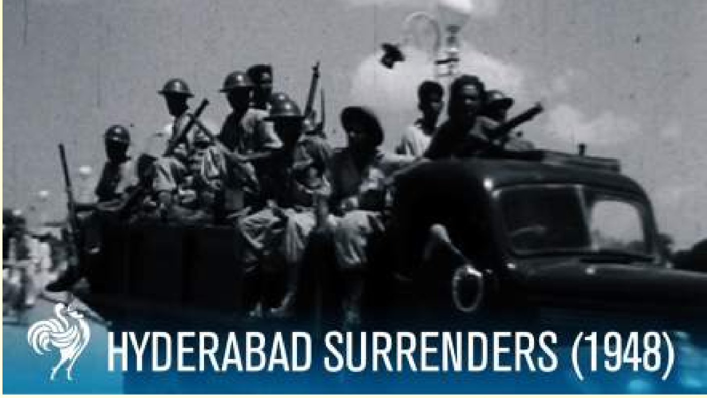

हैदराबाद की आबादी के ८० प्रतिशत हिन्दू लोग थे जबकि अल्पसंख्यक होते हुए भी मुसलमान प्रशासन और सेना में महत्वपूर्ण पदों पर बने हुए थे। हैदराबाद का निजाम उस्मान अली खान विलय न करने पर अड़ा था। हैदराबाद की जनता भारत में विलय चाहती थी, पर उनके आन्दोलन को निजाम ने अपनी निजी सेना रजाकार के द्वारा दबाना शुरू कर दिया। हैदराबाद में भारत-विरोधी गतिविधियाँ चल रही थीं, पाकिस्तान द्वारा भारी-मात्रा में गोला-बारूद वहाँ भेजा जा रहा था और भारत में विलय का पक्ष ले रही हिन्दू जनता की रजाकार सेनाओं द्वारा हत्याएँ की जा रहीं थीं।

जब दिल्ली को लगने लगा कि अब पानी सर से ऊपर जा रहा है और जल्दी ही कुछ न किया गया तो हैदराबाद हाथ से निकल जाएगा तब 'ऑपरेशन पोलो' और 'ऑपरेशन कैटरपिलर' के नाम के अन्तर्गत भारतीय सेना ने अपना कार्य प्रारम्भ किया। भारतीय सेना और रजाकार सेना के बीच ५ दिन तक युद्ध चला। दो हजार से ज्यादा रजाकारों को भारतीय सेना ने मार गिराया और बाकी के रजाकार बीच मैदान से ही भाग खड़े हुए। चूँकि हैदराबाद के निजाम की सेना ने भी भारतीय सेना के खिलाफ रजाकारों का साथ दिया था तो उन्हें भी भारी क्षति उठानी पड़ी और एक प्रकार से हैदराबाद की सारी सेना इस युद्ध में तहस-नहस हो गई। हैदराबाद निजाम समझ चुका था कि अब उसकी खैर नहीं। भारतीय सेना उसके महल तक आ चुकी थी तो इसलिए अब उसने पाला बदल लिया और अपने रेडियो सन्देश में भारत के खिलाफ जंग करने का सारा ठीकरा कासिम रिजवी पर डाल दिया और कहा कि कासिम रिजवी और उसकी सेना 'रजाकारों' ने ही सारे हैदराबाद में आतंक मचाया हुआ था, इसमें मेरा कोई हाथ नहीं, मैं तो उनकी वजह से मजबूर था।

यह थी वह चालाकी, जिसका एक्सटेंशन अब किया जा रहा है कि नबाब और रजाकारों का कोई सम्बन्ध नहीं था। धर्मान्धता से युक्त सभी क्रूर कहानियों का नायक कासिम रिजवी को बनाकर एक शासक केवल मूर्खों के देश में अपनी सफाई देने में सफल हो सकता है। यह ठीक है कि रजाकारों का नेता कासिम रिजवी था परन्तु उसने जिस आतंक का सृजन किया वह निजाम की सहमति के बिना सम्भव ही नहीं था। हैदराबाद की जनता, जो भारत में विलय चाहती थी को काबू करने के लिए इन रजाकारों ने आतंक का रास्ता अपना लिया। गाँवों को लूटना शुरू किया, यही नहीं कई क्षेत्रों में गैर मुस्लिमों पर हमले किये जाने लगे। इस दौरान न केवल निर्दोष लोगों को निशाना बनाया जाने लगा, अपितु महिलाओं और बच्चियों के साथ दुर्व्यवहार भी किया जाने लगा। ये सब ठीक वैसे ही हो रहा था जैसे डायरेक्ट एक्शन डे के दौरान बंगाल क्षेत्र और विभाजन के समय अविभाजित पंजाब में हुआ था। इन सभी अत्याचारों पर निजाम ने आँखें मूँद रखी थी।

अगर पाठक हैदराबाद में आर्यसमाज का इतिहास पढ़ें तो नबाब का दुश्चरित्र सामने आ जाएगा। हैदराबाद राज्य में बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में आर्य समाज की स्थापना हुई। अगले दो-तीन सालों में ही व्यवस्थित ढंग से काम करने वाली लगभग दो सौ शाखाएँ खुल गईं। निजामी राज्य में हैदराबाद के बै. विनायकराव कोरटकर आर्य समाज के अध्यक्ष थे । बंसीलालजी मुख्यमंत्री थे। उन्होंने उद्गीर में अपना मुख्य कार्यालय खोला। उन्होंने 'वैदिक सन्देश' नामक वृत्तपत्र सोलापुर से प्रकाशित करना शुरू किया। १९३० में हैदराबाद राज्य के प्रत्येक जिले में आर्य समाज का संगठन खड़ा होने लगा। उद्गीर के भाई बंसीलाल और श्यामलाल, इन दोनों बन्धुओं ने राज्य में भरपूर कार्य किया। हिन्दू समाज में फैली कमजोरी और हीनभावना को नष्ट कर, उसे पूरे स्वाभिमान और गर्व से जीना आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं, बै. विनायकरावजी विद्यालंकार, पं. नरेन्द्र जी आर्य आदि ने सिखाया। अपने राज्य में आर्य समाज के बढ़ते प्रभाव को देख कर निजाम की वक्रदृष्टि आर्य समाज पर पड़ी। १९३५ में निलंगा में सरकार ने अपने गुण्डों के माध्यम से एक

हवनकुण्ड और एक आर्य समाज मन्दिर को ध्वस्त कर दिया। किसी के हाथ में 'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तक देखते ही निजामी पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती। निलंगा की घटना में सरकारी निष्क्रियता नबाब की निष्पक्षता की पोल खोलती है। इस घटना के बाद आर्यसमाज के नेताओं ने और अधिक सघन रूप अपना कार्य किया और सत्य के पथ पर चलते हुए कौन से ऐसे जुल्म थे जो इस तथाकथित धर्मनिरपेक्ष निजाम शाही में आर्यों ने न सहे?

पंडित व्यासदेव ने हैदराबाद और आर्यसमाज नामक पुस्तक लिखी है उसमे विस्तार से महर्षि दयानन्द के शिष्यों के धर्म-रक्षा के प्रयत्नों और तदर्थ उनके उत्सर्ग का विवरण मिलता है। रजाकार उनके उत्कर्ष से डरकर उन्हें डराने की हर सम्भव कोशिश करती थी। पण्डित व्यासदेव ने लिखा है कि राज्य कर्मचारी किस प्रकार आर्यों को परेशान करते थे।

राज कर्मचारियों द्वारा अत्याचार

१. खटगाँव में कई मुसलमानों ने तीन आर्यसमाजियों के यज्ञोपवीतों को जबरदस्ती तोड़ा और पारले में पुलिस के सब इन्सपेक्टर द्वारा दो आर्य समाजियों के जनेऊ खण्डित किये गये।
२. खंडेनी तालुका के पटेल और उसके भाई ने अहमदपुर के आर्यसमाजियों को इसलिये पीटा की उन्होंने उद्‌गीर आर्य समाज के उत्सव में भाग लिया था।
३. झूंठे अपराधों पर आर्यसमाज के अधिकारियों तथा सदस्यों पर मुकदमें चलाये जाते हैं।
४. राज कर्मचारी आर्यसमाजियों को धमकाते हैं कि यदि वे आर्यसमाज को न छोडेंगे, तो उन्हें तंग किया जायेगा, और उनके विरुद्ध मुकदमे चलाये जायेंगे।
५. आर्यसमाजी तो शिकायत करते हैं उन पर पुलिस तथा अन्य राज्यकर्मचारी ध्यान नहीं देते विपरीत इसके शिकायत करने वालों को हर प्रकार से जलील (अपमानित) किया जाता है।

व्यासदेव जी द्वारा इस पुस्तक में आर्यो के शौर्य की गाथाओं को अंकित किया है जिसमें से महाशय धर्मप्रकाश जी का जिक्र हम यहाँ कर रहे हैं। 'अब म. धर्मप्रकाश जी के विषय की ओर आते हैं। वह कल्याणी आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्त्ता थे। वह नवयुवकों को व्यायाम सिखाया करते थे। मुस्लिम प्रचारकों को उनकी यह प्रगतियाँ पसन्द न आई और उन्होंने उनकी जान लेने का षड्यन्त्र रचा। कल्याणी में ओ३म् का झण्डा उतारने का जब उत्पात हुआ, तब मुसलमान अधिक घृष्ट हो गये और आर्य समाज मन्दिरों तथा आर्यसमाजियों के घरों पर कंकड़ पत्थर फेंक कर और समय-समय पर बन्दूक चलाकर आर्यों को तंग तथा भयभीत करने लग गये। जब डायरेक्टर जनरल पुलिस श्रीयुत् एस.टी हैलिन्स ने गोली चलाने के सम्बन्ध में जाँच की तो मुसलमानों ने यह झूठा बहाना बनाया कि वे बन्दरों को डराने के लिए बन्दूक चलाते हैं।

२७ जून १६३८ को म. धर्मप्रकाश जब आर्यसमाज मन्दिर से घर को लौट रहे थे तो रास्ते में सशत्र मुस्लिम भीड़ ने उन्हें घेर लिया। तलवार और छुरियों से हमला करके उन्हें जख्मी कर दिया।

आह गरीब धर्मप्रकाश! तुम अकेले और निहत्था थे। तुम भीड़ की आग से न बच सके। तुम्हारा अपराध यही था कि तुम उत्साही आर्यसमाजी थे और मुसलमान आतताइयों की मूर्खता, धर्मान्धता और द्वेष के सामने नहीं झुके थे।'

'सत्याग्रह जारी करने के पूर्व हैदराबाद के बहुत से आर्य समाजियों के साथ के साथ जेल में बड़ा कठोर व्यवहार किया गया और जेल में होने वाली मृत्युयें इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। निजाम राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उस प्रधान श्री श्यामलाल जी की हृदय विदारक मृत्यु का कारण जेल में होने वाली पाशविक मार, उनको भूखा रखना एवं खराब भोजन है। सत्याग्रह आरम्भ करने पर भी जेल अधिकारियों एवं निजाम सरकार की ओर से किसी प्रकार की नीतिमत्ता का परिचय नहीं दिया गया, वरन् अधिकाधिक अत्याचार किये गये।

सर्वप्रथम आर्य जगत् के अद्वितीय नेता महात्मा नारायण स्वामी जी के पैर में बेड़ियाँ डाली गईं और उन्हें एक वर्ष का कठिन कारावास दिया गया। इस प्रकार कठोर रवैया एक पूज्य संन्यासी के प्रति किसी धर्मावलम्बी द्वारा उचित नहीं ठहराया जा सकता। निजाम सरकार ने अपनी स्वेच्छाचारिता को कायम रखने की कोशिश में मानवता को भी तिलाजंलि दे दी। यही नहीं

महात्मा जी को आरम्भ में दूध भी नहीं दिया गया एवं आपसे चिकें बनाने का काम लिया गया। पश्चात् श्री गणपतराव जी को जिन की आयु ७५ वर्ष की थी पीट-पीट कर बेहोश कर दिया गया। जेल के अत्याचारों की रक्तरंजित अनेकों गाथाएँ हैं कहाँ तक लिखें। भाई श्यामलाल जी को खराब खाना और पानी देकर प्रताड़ित किया गया। बीमार होने के बाद भी दवाखाने में नहीं ले जाया गया। अंततः जेल में ही उन्हें जहर देकर मार दिया गया।

अनेक आर्यों ने अपने जीवन का उत्सर्ग तक कर दिया परन्तु सरकारी गुण्डों के आतंक के खिलाफ जमकर संघर्ष करते रहे। यहाँ तक कि आर्यसमाज को आन्दोलन छेड़ना पड़ा जिसने अन्ततोगत्वा निजामशाही को झुका दिया। हैदराबाद को भारत में विलय कराने में सरदार बल्लभ भाई पटेल को जो सफलता मिली उसके पीछे आर्यों के हैदराबाद सत्याग्रह का बहुत बड़ा हाथ था और इस बात को सरदार बल्लभ भाई ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार भी किया।

इस संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट है कि हैदराबाद के निजाम के प्रशासन ने गैर मुस्लिमों को प्रताड़ित करने में सारी सीमाओं का उल्लंघन कर लिया था। मीर उस्मान अली ने हैदराबाद को सजाने संवारने अथवा सुविधाओं की वृद्धि के लिए कुछ भी किया हो परन्तु 'सर्वपन्थ समभाव' का उनमें नितान्त अभाव था।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- 2021 के पुरस्कार घोषित

श्रीमद् सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल के कार्यालय में न्यास अधिकारियों कि उपस्थिति में लॉटरी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश पहेली-2021 के विजेता घोषित किये गयें। पहेली के नियमानुसार वर्ष भर में 12 सही उत्तर भेजने वाले को प्रथम पुरस्कार दिया जाता है लेकिन 2021 में पूरे 12 सही उत्तर किसी के न होने के कारण प्रथम पुरस्कार निरस्त किया जाता है। केवल द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ पुरस्कार ही घोषित किये जा रहे हैं।

निम्न प्रतिभागियों को विजेता घोषित किया गया-

द्वितीय- श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.) (पुरस्कार राशि 1100 तथा प्रमाण पत्र)
तृतीय- श्री हीरा लाल बलई; उदयपुर (राज.) (पुरस्कार राशि 700 तथा प्रमाण पत्र)
चतुर्थ- श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (मध्यप्रदेश) (पुरस्कार राशि 500 तथा प्रमाण पत्र)

उपरोक्त विजेताओं को न्यास की ओर से बहुत-बहुत बधाई।

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (एकादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	र १	१	■	२	२ म	२	२ र	२	■
३	३ ज	३	त ३	■	४	४ ह	४	रा ४	■
■	५	लं ५	५	■	६ पु	६	६ मा	६	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. मन की वृत्ति को कबीरपन्थी क्या कहते हैं?

२. रामस्नेही मत के मुख्य गुरु का क्या नाम था?

३. दादू जी का जन्म कहाँ हुआ था?

४. रामस्नेही मत कहाँ से शुरू हुआ?

५. गोकुलिये गुसाइयों का मत कहाँ से चला?

६. गोसाईं लोग अपने सम्प्रदाय को क्या कहते हैं?

''विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जुलाई २०२२

देवं वहन्ति केतवः

प्रो. श्यामलाल कौशल

मित्रो ! विरक्त वेश में भी अविरक्त वेश धारण किए, समस्त कामनाओं से रहित, अनेक विद्याओं में रमण करने की कामना वाला, भव्य भावनाओं से कल्पित, कामरहित कामवाला, मुनिता को मण्डित करने वाला दयानन्द मनुष्य जाति के सर्वविध कल्याण की कामना से रूप रूप प्रतिरूप था। सर्वरूप को वेदादि शास्त्र सिद्धान्त को परमादर से ध्यान कर तथा प्राचीन आर्य ऋषि मुनियों के इतिहास को पुरस्कृत अर्थात् सामने रख, अभिनव क्रम से माला में मणियों के समान गर्भाधान अर्थात् शरीर के आरम्भ से लेकर शमशानान्त अर्थात् अन्त्येष्टि पर्यन्त षोडश संस्कारों को मनुष्यों के आत्मा और शरीर को उत्तम होने के लिए 'संस्कार विधि' ग्रन्थ में पिरोया है, वह सर्वथा निर्विकल्पक अर्थात् इस रीति से पृथक् अन्य कोई विकल्प नहीं है। ऐसे निर्विकल्पक रूप को आर्यकुलकमलदिवाकर, विलक्षण प्रतिभा से विचित्र ऊहा के प्रतीक श्री अशोक आर्य ने उदयपुर स्थित गुलाब बाग, नवलखा महल में 'संस्कार वीथिका' में अपने प्रज्ञान मन से समस्त जनों के सुख बोध के लिए, ऋषि द्वारा १६ संस्कारों में निगूढ़ भावों में निहित अव्यक्त अमूर्त रूप को अपने बुद्धिविभव वैभव द्वारा मूर्त रूप अर्थात् प्रतीक चित्राकृतियों में चित्रित किया है, वह प्रति संस्कार रूप-रूप प्रतिरूप हो सजीवता से बोलता हुआ सा मनुष्यों के चित्त में चित्रांकित हो जाता है तथा ये जड़ प्रतीकें अपनी आकृति से प्राचीन संस्कृति की ओर संकेत करती हुई आगन्तुक समस्त दर्शकों को अपनी ओर आहूत वा आकर्षित करती हुई ऋषि मुनियों द्वारा बैजिक और गार्भिक दोषों के परिमार्जन करने की पद्धति की ओर इशारा कर उन्नत पूर्वजों की आत्मानुभूति करा आत्मग्लानि के महासागर में डुबोकर पश्चाताप के ताप से तप्त कर देती हैं।

यह कार्य आर्य समाज की दृष्टि से इसलिए आश्चर्यजनक है कि इस प्रकार की बुद्धिनिष्ठ सोच ही किसी की नहीं है। यह प्रथम अभिनव सोच श्री अशोक आर्य की शुचि बद्धि की उपज है। यह संस्कार वीथिका उसी का साकार रूप है। अशोक जी के इस शिल्प को साहित्यिक मनीषियों के लिए साहित्यिक लेख में आबद्ध किया है।

'देवं वहन्ति केतवः' अर्थात् प्रतीक को वैदिक भाषा में 'केतु' कहा जाता है। प्रत्येक प्रतीक सृष्टि के उस महान् देव का 'केतु' या चिह्न है। इस सृष्टि में जो कुछ हम देखते हैं, वह सब देवाधिदेव के प्रतीक रूप में उसी की महिमा को व्यक्त करते हैं। सूर्य ,चन्द्र, नक्षत्र, आकाश, पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और बिन्दु, रेखा, त्रिकोण, चतुष्कोण सब उस देव के शिल्प हैं। उसी की प्रतीति कराने हारे हैं। वृक्ष, वनस्पति, औषधि, पुष्प, लताएँ, पशु, पक्षी सब प्रतीक रूप में कलाकृतियों में स्थान पाते हैं। पूर्ण घट, त्रिरत्न, स्वास्तिक, मीनयुगल, देवगृह, कौस्तुभ जो अनेक मांगलिक चिह्न हैं, वे प्रतीकों के रूप हैं। जिन्हें मानव की कलात्मक भाषा में शिल्प में सौन्दर्य की अभिव्यक्ति के लिए कल्पित किया है। ये चिह्न कला की अभिव्यक्ति के लिए वर्णमातृका के समान हैं जो अर्थ की प्रतीति के लिए आवश्यक हैं क्योंकि वर्णों के भीतर अन्तर्निहित अव्यक्त अनन्त अर्थ का आत्मसात् करने के लिए वाणी ही एक मात्र साधन है। यद्यपि इस साधन की भी एक सीमा है क्योंकि अर्थ अमूर्त्त है उसको मूर्त्त शब्दों द्वारा समग्र रूप में पकड़ पाना असम्भव है। इसलिए अन्ततोगत्वा प्रत्येक शब्द अपने अर्थ का प्रतीक मात्र बनकर रह जाता है। कला और काव्य दोनों ही का उपजीव्य भावलोक है। भावलोक ही सृष्टि का मूल है। जब यह समस्त विश्व अप्रतर्क्य, अचिन्त्य, अलक्षण, अकमनीय, तमोभूत, अप्रज्ञात एकात्मप्रत्ययसार अव्यक्त था, उसी अव्यक्त से भाव का उद्गम हुआ। अमित से मितभाव में आया। जब शान्त रसरूप महासमुद्र के गर्भ में स्पन्दनात्मक बलों का जन्म हुआ, यही भाव का उद्गम है। इसलिए सृष्टि उत्पत्तिक विषयक मन्त्रों के देवता 'भाववृत्त' हैं।

इसी भाव सृष्टि से गुण सृष्टि का जन्म होता है फिर भाव

नवलखा महल की संस्कार वीथिका में कर्णवेध संस्कार

और गुण दोनों समुदित भूत सृष्टि में परिवर्त्तित होते हैं। देखिए-भाव सृष्टि मन से, गुणसृष्टि प्राण से और भूतसृष्टि भौतिक रूप से है। तीनों की एक सूत्रता से सृष्टि सम्भव है। ज्ञान, क्रिया और अर्थ इन तीनों के नामान्तर मन, प्राण और अर्थ हैं। ज्ञान या मन से जब प्राण छन्दित होता है तभी अर्थ या भूत मात्रा का जन्म होता है। इस प्रकार प्रत्येक स्थूल पदार्थ या शिल्पकृति भावों का एक प्रतीक मात्र है। इस प्रकार प्रत्येक प्रतीक एक-एक रूप है- जो विश्व के अनन्त अर्थों का मूर्त्त परिचायक बना हुआ है। इस प्रकार शब्द और अर्थ का, मूर्त्त और अमूर्त्त का, अतिरमणीय विधान हमारे चारों ओर फैला हुआ है। वस्तुतः इन सबका ओतप्रोत भाव ही विश्व है। मूर्त्त के अन्दर बैठा हुआ अमूर्त्त अमृत अर्थ प्रतिक्षण झाँकता हुआ दिखाई पड़ता है।

शब्द सौन्दर्य और अर्थ सौन्दर्य दोनों एक दूसरे के साथ समन्वित होते हैं। उसी श्रेष्ठ स्थिति को कालिदास जैसे महाकवि ने वागर्थ सम्पृक्त काव्य कहा है। जैसे काव्य में वैसे कला में भी आभ्यन्तर अर्थ और बाह्य रूप दोनों का समान विधान हो वह श्रेष्ठकला की अभिव्यक्ति है।

किसी वस्तु को देखने के लिए तीन दृष्टियाँ मानी गई हैं। शिरोमूला, पादमूला और चक्षुमूला। सूक्ष्म से स्थूल की ओर आना शिरोमूला दृष्टि है। इसी को ज्ञान दृष्टि या संचर दृष्टि कहते हैं।

स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाना अर्थात् स्थूल प्रतीक से सूक्ष्म अर्थ तक पहुँचना यह पादमूला दृष्टि है। इसे ही प्रतिसंचर क्रम या विज्ञान का दृष्टिकोण कहते हैं। तीसरी दृष्टि वह है जिसमें स्थूल और सूक्ष्म अथवा ज्ञान और विज्ञान दोनों का समन्वय पाया जाता है। इसे चक्षुमूला दृष्टि कहते हैं। वास्तव में उत्तम कला के साथ इसी का सम्बन्ध है।

ब्रह्माण्ड मूर्त्त रूपों की समष्टि है। प्रजापति के दो रूप हैं। मूर्त्त और अमूर्त्त। अमूर्त्त का मूर्त्त में आना ही सृजन है। जितने ये मूर्त्त रूप हैं जिस स्रोत से पैदा हुए हैं उसे ही वैदिक भाषा में प्रतिरूप कहते हैं। प्रतिरूप अमूर्त्त है। वह सब रूपों की समष्टि है। सब रूपों की समष्टि प्रतिरूप वही हो सकता है जो सच्चिदानन्द स्वरूप, सब जगत् का भूप, सबसे अनूप और अरूप हो, वही सब रूपों में रूप-रूप होकर प्रतिरूप परिणित है। वह एक है और नाना भाव विरहित है। सब रूपों के साथ उसका तादात्म्य है प्रतिरूप में सब रूपों का अन्तर्भाव है।

व्यक्त भावों की संज्ञा रूप है। जितने व्यक्त भाव हैं सब अव्यक्त से उत्पन्न हुए हैं और अव्यक्त में लीन होते हैं। गणित की दृष्टि से कल्पना करें तो जितने अंक हैं वे सब रूप हैं। सब अंकों की समष्टि शून्य है। शून्य में सब अंकों का अन्तर्भाव है। ऐसा कोई अंक नहीं जो शून्य में न हो। इसलिए शून्य रूपहीन है।

इस प्रकार एक एक वर्ण का अपना रूप है किन्तु सब वर्णों की समष्टि स्वयं अवर्ण है। सूर्य रश्मियों के पृथक्-पृथक् वर्ण रंग हैं पर उनकी समष्टि का वर्ण श्वेत है। इस प्रकार विश्व के सब रूप जिस बिन्दु में केन्द्रित होते हैं वह सबका मूल प्रतिह्य है।

शिल्पी निर्माण की इच्छा से जब ध्यान करता है तो उसके ध्यान में सब रूप समाविष्ट रहते हैं। उसका प्रज्ञानमन जब

एक रूप को पकड़ता है तो वही रूप स्फुट होकर चित्र मिट्टी या पाषाण में अभिव्यक्त होता है। शेष रूप हट जाते हैं। समस्त रूपों की समष्टि में से जब एक रूप को शिल्पी एक बिन्दु पर प्रकट कर देता है वही शिल्पी की अभिव्यक्ति हो जाती है। उस रूप में अपने प्रतिरूप की जैसी पूर्ण अभिव्यक्ति होगी उतनी ही श्रेष्ठ वह शिल्पकृति मानी जायेगी। रूप वही अच्छा हैजो अपने प्रतिरूप का अधिकतम परिचय दे सके। वही शिल्पकृति विश्वरूप या प्रतिरूप के

अधिक निकट है जिसमें व्यक्ति का रूप कम से कम हो। व्यक्ति का रूप परिच्छिन्न या सीमित होता है यही इस रूप की दरिद्रता है।

भारतीय शिल्पी ने व्यक्तियों की प्रतिकृति या रूपों से मोह करना नहीं सीखा। उसके शिल्प का निर्माण उस भाव जगत् में होता है जिसमें वह सर्वरूप का ध्यान करता है। सर्वरूप का तात्पर्य समाजव्यापी परिनिष्ठित रूप से है। व्यक्ति विशेष के सादृश्य से नहीं। युग विशेष में स्त्री पुरुषों के प्रतिमानित सौन्दर्य का ध्यान करके शिल्पी उसे चित्र या शिल्प में प्रयुक्त करता है। व्यक्ति विशेष के रूप को वह अपने लक्षण या चित्र में नहीं उतारता। वह तो समाज में आदर्शभूत सर्वरूपों का एक बिम्ब कल्पित करता है। रूप की वह भांति युग की भांति बन जाती है। संस्कार वीथिका की प्रतिमाएँ स्त्री पुरुष विशेष

की आकृति नहीं। वे तो जगत् की आदर्श प्रतिकृति हैं, वे तो दिव्य भावों से सम्पन्न रूप हैं।

शिल्पी का मन नितान्त सीमित या वैयक्तिक प्रतिकृति शिल्प में उल्लसित नहीं होता। यहाँ प्रतिकृति का अंकन आश्चर्य माना है। व्यक्ति का स्वतंत्ररूप या सौन्दर्य सीमा भाव में बद्ध होने के कारण प्रवाह से विरहित या खंडित हो जाता है। खण्ड भाव में मृत्यु का निवास है। जहाँ मृत्यु की छाया है, वहां आनन्द रस अमृत की अनुभूति नहीं होती।

श्री अशोक आर्य के द्वारा प्रयुक्त मानव पुतलों के चित्रों की प्रतीकें संस्कारों के प्रतिरूपों की उपासना करना है। ये प्रतीकें उन संस्कारों के 'केतु' हैं जो मनुष्यों को देव बनाते हैं। यहीं केतु चिह्न या लिंग अपने देव को प्राप्त करते हैं। **'देवं वहन्ति केतवः'।**

जैसे ये विश्व केतु सर्वरूप प्रतिरूप उस महान् देव तक पहुँचाते हैं वैसे ही संस्कार वीथिका के इन प्रतीकों, चिह्नों या 'केतु लिंगों के देखकर प्राचीन प्रतिरूप ऋषि-मुनियों के सर्वरूपों तक पहुँच हो जाती है।

निःसन्देह श्री अशोक आर्य की नवनवोन्मेषिनी प्रतिभा धन्य हैं। हम उनको और उनकी उस बुद्धि वैभव को नमन करते हैं।

- आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट, अलखनन्दा, नई दिल्ली

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज हमें उदयपुर में गुलाब बाग स्थित आर्य चित्रदीर्घा के भ्रमण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहाँ पर स्वामी जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश के विषय में जाना। स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन के प्रत्येक पहलुओं को आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा के माध्यम से बहुत ही सुन्दर तरीके से हमें समझाया गया। स्वामी दयानन्द के आदर्श हमें जरूर अपनाने चाहिए। स्वामी जी जैसे सन्तों की जीवनी का म्यूजियम अपने परिवार व बच्चों के साथ अवश्य एक बार देखना चाहिए। जिससे परिवार व बच्चों में हमारी भारतीय संस्कृति एवं प्राचीन ग्रन्थों का ज्ञान बढ़ेगा। मैं चाहता हूँ कि उदयपुर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को इस नवलखा महल के अन्दर बने आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, संस्कार वीथिका आदि का दर्शन कर अवश्यमेव लाभ उठाना चाहिए।

- दिनेश कुमार मीणा, सीकर

आज दिनांक २६ मार्च २०२२ को मैं व्रतानन्द सरस्वती अपने साथी स्वामी नारदा नन्द जी, आचार्य उमेश चन्द्र जी, आचार्य पुष्पा जी, आचार्य नर्मदा जी, श्री उपेन्द्र वानप्रस्थ, श्री विश्वरंजन इंजीनियर आदि के साथ गुलाब बाग स्थित नवलखा महल जहाँ आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का लेखन कार्य पूर्ण किया था आये। इस समय यहाँ पर स्मारक भवन के रूप में अनेक शिक्षाप्रद गैलरी तथा वीथिका बन चुका है जो वर्तमान समय में लोगों के लिए अत्यन्त प्रेरणा वर्धक सिद्ध होगी। इस कार्य को यहाँ के यशस्वी प्रधान श्री अशोक आर्य जी तथा कर्मठ महामंत्री भवानी दास जी, मैनेजर भंवर लाल जी गर्ग आदि सज्जनों के प्रयत्न से बनकर तैयार हो गया है। आर्यो से निवेदन है कि अपने तीर्थस्थल पर अवश्य पधार कर यहाँ के कार्य को गति प्रदान करने में सहायक बने। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि नवलखा महल में जो भी कार्य हो रहा है वह दिन प्रतिदिन लोगों के बीच पहुँचे और यहाँ के जो भी शिक्षाप्रद गैलरी आदि बनाए गए हैं इसके विषय में सभी जानें।

- व्रतानन्द सरस्वती, आचार्य-गुरुकुल आश्रम, उड़ीसा

सुखी परिवार-सुख का आधार

परिवार, भारतीय समाज में, अपने आप में एक संस्था है और प्राचीन काल से ही भारत की सामूहिक संस्कृति का एक विशिष्ट प्रतीक है। संयुक्त परिवार प्रणाली या एक विस्तारित परिवार भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है, जब तक कि शहरीकरण और पश्चिमी प्रभाव के मिश्रण ने उस संस्था को झटका देना शुरू नहीं किया। परिवार एक बुनियादी और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है जिसकी व्यक्तिगत और साथ ही सामूहिक नैतिकता को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। परिवार सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का पोषण और संरक्षण करता है। एक संस्था के रूप में परिवार का आज पतन देखें तो अर्थव्यवस्था के बढ़ते व्यावसायीकरण और आधुनिक राज्य के बुनियादी ढांचे के विकास ने २०वीं शताब्दी में भारत में परिवार की संरचना में एक महत्वपूर्ण बदलाव किया है। विशेष रूप से, पिछले कुछ दशकों में पारिवारिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

गिरावट के प्रतीक के रूप में आज परिवार खंडित हो रहा है, वैवाहिक सम्बन्ध टूटने, आपसी भाईचारे में दुश्मनी एवं हर तरह के रिश्तों में कानूनी और सामाजिक झगड़ों में वृद्धि हुई है। आज सामूहिकता पर व्यक्तिवाद हावी हो गया है. इसके कारण भौतिकोन्मुख, प्रतिस्पर्धी और अत्यधिक आकांक्षा वाली पीढ़ी तथाकथित जटिल पारिवारिक संरचनाओं से संयम खो रही है। जिस तरह व्यक्तिवाद ने अधिकारों और विकल्पों की स्वतंत्रता का दावा किया है। उसने पीढ़ियों को केवल भौतिक समृद्धि के परिप्रेक्ष्य में जीवन में उपलब्धि की भावना देखने के लिए मजबूर कर दिया है।

ये सभी परिवर्तन बढ़ते शहरीकरण के सन्दर्भ में हो रहे हैं, जो बच्चों को बड़ों से अलग कर रहा है और परिवार-आधारित सहायता प्रणालियों के विघटन में योगदान दे रहा है। परिवार व्यवस्था में गिरावट लोगों में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों का सामना करने के मामले पैदा कर सकती है। संस्था के रूप में परिवार में गिरावट समाज में संरचनात्मक परिवर्तन लाएगी। पर्याप्त सामाजिक-आर्थिक विकास और कृषि से बदलाव के संयुक्त प्रभाव के कारण प्रजनन क्षमता में गिरावट आई है। बच्चों की संख्या के बजाय जीवन की गुणवत्ता पर जोर दिया गया।

दृष्टिकोण, व्यवहार और समझौता मूल्यों में प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित परिवर्तन विवाह टूटने का प्रमुख कारण बनता जा रहा है। असामाजिक व्यवहार तेजी से परिवारों को नष्ट कर रहा है। उच्च आय और परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति

कम जिम्मेदारी ने विस्तारित परिवारों को अलग होने के लिए आकर्षित किया है। आज के अधिकांश सामाजिक कार्य, जैसे बच्चे की परवरिश, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, बुजुर्गों की देखभाल आदि बाहरी एजेंसियों, जैसे कि क्रेच, मीडिया, नर्सरी स्कूल, अस्पताल, व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा अपने हाथ में ले लिए गए हैं। धर्मशाला संस्थान, अंतिम

संस्कार ठेकेदार आदि। ये कार्य पहले विशेष रूप से परिवार द्वारा किए जाते थे।

'बड़े बात करते नहीं, छोटों को अधिकार!
चरण छोड़ घुटने छुए, कैसे ये संस्कार!!
कहाँ प्रेम की डोर अब, कहाँ मिलन का सार!
परिजन ही दुश्मन हुए, छुप-छुप करे प्रहार!!'

परिवार संस्था के पतन ने हमारे भावनात्मक रिश्तों में बाधा पैदा कर दी है। एक परिवार में एकीकरण बन्धन आपसी स्नेह और रक्त से सम्बन्ध हैं। एक परिवार एक बन्द इकाई है जो हमें भावनात्मक सम्बन्धों के कारण जोड़कर रखता है। नैतिक पतन परिवार के टूटने में अहम कारक है क्योंकि वे बच्चों में दूसरों के लिए आत्मसम्मान और सम्मान की भावना नहीं भर पाते हैं। पद-पैसों की अंधी दौड़ से आज सामाजिक-आर्थिक सहयोग और सहायता का सफाया हो गया है। परिवार अपने सदस्यों, विशेष रूप से शिशुओं और बच्चों के विकास और विकास के लिए आवश्यक वित्तीय और भौतिक सहायता तक सीमित हो गए हैं, हम आये दिन कहीं न कहीं बुजुर्गों सहित अन्य आश्रितों की देखभाल के लिए, अक्षम और दुर्बल परिवार प्रणाली की गिरावट की बातें सुनते और देखते हैं जब उन्हें अत्यधिक देखभाल और प्यार की आवश्यकता होती है।

परिवार एक बहुत ही तरल सामाजिक संस्था है और निरन्तर परिवर्तन की प्रक्रिया में है। समान-लिंग वाले जोड़ों (एलजीबीटी सम्बन्ध), सहवास या लिव-इन सम्बन्धों, एकल-माता-पिता के घरों, अकेले या अपने बच्चों के साथ रहने वाले तलाकशुदा लोगों के एक बड़े हिस्से ने अब इस संस्था को कमजोर कर दिया है। इस प्रकार के परिवार अनिवार्य रूप से पारम्परिक नातेदारी समूह के रूप में कार्य नहीं कर सकते हैं और भविष्य में समाजीकरण के लिए संस्था साबित नहीं हो सकते। भौतिकवादी युग में एक-दूसरे की सुख-सुविधाओं की प्रतिस्पर्धा ने मन के रिश्तों को झुलसा दिया है।

कच्चे से पक्के होते घरों की ऊँची दीवारों ने आपसी वार्तालाप को लुप्त कर दिया है। पत्थर होते हर आँगन में फूट-कलह का नंगा नाच हो रहा है। आपसी मतभेदों ने गहरे मन भेद कर दिए हैं। बड़े-बुजुर्गों की अच्छी शिक्षाओं के अभाव में घरों में छोटे रिश्तों को ताक पर रखकर निर्णय लेने लगे हैं। फलस्वरूप आज परिजन ही अपनों को काटने पर तुले हैं। एक तरफ सुख में पड़ोसी हलवा चाट रहे हैं तो दुःख अकेले भोगने पड़ रहें हैं। हमें ये सोचना-समझना होगा कि अगर हम सार्थक जीवन जीना चाहते हैं तो हमें परिवार की महत्ता समझनी होगी और आपसी तकरारों को छोड़कर परिवार के साथ खड़ा होना होगा तभी हम बच पायेंगे और ये समाज रहने लायक होगा।

– प्रियंका सौरभ

डॉ. अर्चना प्रिय आर्य को असिस्टेंट प्रोफेसर के चयन में पाँचवां स्थान

मथुरा। आर्य जगत् की सुप्रसिद्ध उपदेशिका डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने असिस्टेंट प्रोफेसर के चयन में पाँचवां स्थान प्राप्त कर पूरे आर्य जगत् का नाम रोशन किया है।

इस अवसर पर डॉ. अर्चना ने कहा कि इस सफलता में उनकी कड़ी मेहनत तथा माता-पिता, भाई-बहन, पति व गुरुजनों का सहयोग व योगदान रहा है।

मूल रूप से ऊँचागाँव निवासी वैदिक प्रवक्ता आचार्य सत्यप्रिय आर्य (प्रधान) व सरोज रानी आर्य की बेटी डॉ. अर्चना प्रिय की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव ऊँचागाँव में ही हुई। लेकिन बाद में उच्च शिक्षा के लिए मथुरा आयीं और यहाँ से संस्कृत और हिन्दी में परास्नातक, बी.एड. तथा सन् २०१३ में संस्कृत विषय में संस्कारों के विषय पर शोध किया, जिस पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया। इनके दादा-दादी व पिता हैदराबाद में निजाम के खिलाफ, गौ रक्षा व हिन्दी रक्षा आन्दोलनों में भाग ले चुके हैं। वर्ष १९९६ में अपने गाँव में ही आर्य समाज के द्वारा एक जलसा किया गया था, जिसमें आये विद्वानों से प्रभावित होकर ही उन्होंने यह संकल्प किया कि वह भी आर्य समाज के अभियान को आगे बढ़ायेंगी। फिर क्या था मात्र १० वर्ष की आयु में ही इन्होंने छोटी बहिन वन्दना प्रिय आर्य के साथ महर्षि देव दयानन्द के मिशन को आगे बढाने कार्य शुरू किया, जो आर्य समाज के उपदेशक के रूप में आज भी जारी है। वर्तमान में डॉ. अर्चना प्रिय आर्य संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष हैं तथा भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को पुनः घरों में स्थापित करने के उद्देश्य कार्य कर रहीं हैं। उनके द्वारा वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार का कार्य भी पिछले २६ वर्ष से निरन्तर जारी है। सामाजिक संस्थाओं द्वारा उनको अनेक सम्मान एवं पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। डॉ. अर्चना प्रिय को न्यास की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

हम नहीं भूलेंगे.... कभी नहीं भूलेंगे....
दरिया-ए-सिन्ध को....
जज्बा-ए-हिन्द को....
कैलाश मानसरोवर
वसुधा का नाभि बिन्दु है,
उस बिन्दु की जलधारा से
निकला दरिया ही सिन्धु है।
पिता-हिमालय की करुणा से
सुता-सिन्धु का वेग बढ़े,
सिन्धु किनारे ऋषियों ने
ईश्वर के पवित्र वेद पढ़े।
पावन वेद को.... ज्ञान के तेज को....
हम नहीं भूलेंगे.... कभी नहीं भूलेंगे....
तारीख गवाह सम्राटों को
सिन्धु ने पानी पिलाया है,
फारस का दरायस यूनानी
सिकन्दर भी हराया है।
फारस अरबी ने सिन्ध को
'हिन्द' और 'हिन्दौस' कहा
यूनानी ने इसी सिन्ध को
'इंडस' और 'इन्दौस' कहा
इंडस से ये बना 'इण्डिया'
शान हमारी सिन्धु है
दीन धर्म सोबत बदली
पहचान हमारी हिन्दु है
सिन्ध पहचान को.... हिन्द की शान को....
हम नहीं भूलेंगे.... कभी नहीं भूलेंगे....
हिन्द बँधा हिमालय की
बाहों में एक सूत्र है,
सिन्धु भुजा पश्चिम में
और पूरब में ब्रह्मपुत्र है।
हिन्दु कुश पामीरों पे थी
हिन्द की सम्राट पताका,
त्री-सागर की लहरें गाती
हिन्द की गौरव गाथा।
सिन्धु-कोख से जन्मी थी
दुनिया की पहली सभ्यता....
वह घाटी, मोहन जोदाड़ो कि,
वह माटी थी हरप्पा....
पुरखों की माटी को....
माँ सिन्धु घाटी को....
हम नहीं भूलेंगे.... कभी नहीं भूलेंगे....

- धर्मराज मीणा
मुख्य मेट्रोपोलीटन मजिस्ट्रेट

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

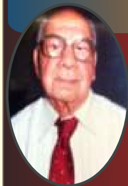

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

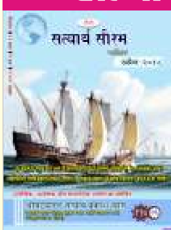

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

ईश्वर मनुष्यादि प्राणियों के सभी शुभाशुभ कर्मों का द्रष्टा व फलप्रदाता है

मनमोहन कुमार आर्य

यह समस्त दृश्यमान जगत् ईश्वर ने बनाया है और वही इसका संचालन व पालन कर रहा है। इस सृष्टि का इसकी अवधि पूरी होने पर प्रलय भी वही करता है। यह एक तथ्य है कि इससे पूर्व भी असंख्य व अनन्त बार सृष्टि सृजित हुई है व असंख्य बार ही इसका प्रलय भी हुआ है। यह सृष्टि ईश्वर ने जीवात्माओं को कर्म करने व उसके अनुकूल फल पाने के लिए बनाई है। इसके लिए ईश्वर जीवों को उनके कर्मानुसार जाति, आयु व भोग देता है। जाति का अर्थ मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट व पतंग आदि अनेक व असंख्य जातियों प्रजातियों से है। जिनका प्रसव समान होता है उनकी एक ही जाति होती है। सभी मनुष्यों की जाति एक ही है और वह है मनुष्य जाति। इसकी दो उपजातियाँ स्त्री व पुरुष होती हैं। मनुष्य की बाल, किशोर, युवा, प्रौढ़ व वृद्ध आदि कई अवस्थायें होती हैं। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी, कर्म-फल प्रदाता आदि अनेक व अगणित गुणों वाला है। सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी होने से यह जीवों के भीतर भी विद्यमान है। अतः जीवों की आत्मा में उठने वाले सभी विचारों व कर्मों को ईश्वर वहां उपस्थित होने से साक्षी होता है और उसे उसी समय उसका ज्ञान हो जाता है। मनुष्यों व अन्य सभी प्राणियों के सभी कर्मों को ईश्वर जानता है और उसके अनुसार उन्हें सुख व दुःख प्रदान करता है। मनुष्य जीवन में जो कर्म करता है वह उसकी मृत्यु होने से पूर्व कुछ का भोग कर लेता है तथा कुछ कर्मों का भोग नहीं हो पाता। जिन कर्मों का भोग नहीं हो पाता, उन कर्मों का भोग जीवात्मा मृत्यु के बाद कर्मानुसार जन्म मिलने पर ईश्वर की व्यवस्था से करता है। हम इस जन्म में मनुष्य बने हैं तो इसका कारण हमारे पूर्वजन्म के कर्म व प्रारब्ध था। अन्य मनुष्यों को भी इसी नियम के अनुसार जन्म मिला है। अन्य पशु-पक्षी आदि प्राणियों को भी उनके पूर्वजन्म व अनेक पूर्वजन्मों के कर्मों के अनुसार ही जन्म मिला है जिसे वह इस जन्म में भोग रहे हैं। जिन कर्मों का फल भोग लिया जाता है, उन कर्मों के भोग व फल समाप्त हो जाते हैं। उसके बाद बचे हुए, बिना भोगे गये व नये कर्मों का फल मनुष्यों को मिलता जाता है। ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति अनादि, अमर, नित्य, अविनाशी हैं अतः सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय सहित जीवात्मा के जन्म व मरण का क्रम अनादि काल से चलता आया है और अनन्त काल तक इसी प्रकार से चलता रहेगा।

ईश्वर जीवात्माओं के कर्मों का द्रष्टा वा साक्षी होता है। सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी एवं सर्वज्ञ आदि गुणों के द्वारा ईश्वर मनुष्यादि सभी प्राणियों के कर्मों को जानने वाला है, ऐसा भी कहा व माना जाता है। सर्वज्ञ होना उसका अनादि काल से नित्य गुण चला आ रहा है। अपनी सर्वज्ञता से ही वह सभी जीवों के सभी कर्मों, छोटे व बड़े, को जानता है। रात्रि के अन्धेरे में भी हम जो कार्य करते हैं वह सब ईश्वर के समक्ष निर्भ्रान्त रूप से उपस्थित रहते हैं। ईश्वर में मनुष्यों व अन्य प्राणियों की तरह विस्मृति का गुण वा अवगुण नहीं है। वह जिस बात को जानता है उसको कभी भूलता नहीं है। इसी कारण वह न्यायाधीश की तरह सभी जीवों को उनके सभी कर्मों का फल अपने विधि विधान के अनुसार यथासमय देता है। कर्मों में भिन्नता व अन्तर होने के कारण ही मनुष्यादि प्राणियों

की भिन्न-भिन्न योनियाँ व सुख-दुःख हैं। मनुष्य जो शुभ कर्म करता है, उसके परिणामस्वरूप ईश्वर उसके स्थान पर सुख प्रदान करता है और जो अशुभ कर्म किये जाते हैं उसका मनुष्य आदि प्राणियों को दुःख के रूप में फल मिलता है। यह व्यवस्था अनादि काल से निरपवाद रूप से भली भांति चली आ रही है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु उन कर्मों का फल भोगने में वह ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र व ईश्वर के अधीन है। कर्म फल व्यवस्था के इस रहस्य को जानकर किसी भी मनुष्य को, चाहे वह वैदिक धर्मी है या नहीं, अशुभ, पाप व बुरे कर्मों को नहीं करना चाहिये। किसी मनुष्य या पशु-पक्षी आदि को पीड़ा नहीं देनी चाहिये। मांसाहार तो कदापि नहीं करना चाहिये। सबके प्रति, प्रेम, दया, न्याय व करुणा के भाव रखने चाहिये। कोई मनुष्य अपने जीवन में दुःख नहीं चाहता। अतः किसी भी मनुष्य को अशुभ कर्म कदापि नहीं करने चाहिये तभी वह ईश्वर के दण्ड दुःखों से बच सकते हैं।

मनुष्य का कर्तव्य है कि वह ईश्वर का सृष्टि उत्पन्न करने, उसे चलाने, हमें मनुष्य का जन्म देने व सुख प्रदान करने के लिए प्रातः व सायं अच्छी प्रकार से धन्यवाद करे। इसी को सन्ध्या का नाम दिया जाता है। ऋषि दयानन्द ने सन्ध्या की एक आदर्श विधि भी लिखी है। सबको उसका अध्ययन कर उसके अनुसार प्रातः व सायं यथासमय सन्ध्या अर्थात् ईश्वर का ध्यान करते हुए उसका धन्यवाद अवश्य करना चाहिये। हमारे जीवन व अन्य प्राणियों के लिए प्राण वायु अर्थात् शुद्ध हवा की आवश्यकता होती है। हमारा कर्तव्य है कि हम ऐसा कोई काम न करें जिससे वायु अशुद्ध हो। न चाहते हुए भी भोजन आदि पकाने, वस्त्र आदि धोने, गेहूँ आदि पीसने, चूल्हा व चौका आदि से जल व वायु आदि की अशुद्धि होती है और इसके साथ वायु व जल के कीटाणु भी नष्ट हो जाते हैं। इस अशुद्धि वा वायु एवं जल प्रदूषण को दूर करने के लिए वेद की आज्ञानुसार हमारे ऋषियों ने दैनिक अग्निहोत्र का विधान किया है। यह अग्निहोत्र यज्ञ प्रातः व सायं, सूर्योदय के समय व

सूर्यास्त से पूर्व, करने का विधान है। इसका भी अनुष्ठान सभी मनुष्यों को करना चाहिये। जो व्यक्ति करेगा उसे इसका लाभ मिलेगा और जो नहीं करेगा वह इससे होने वाले लाभों से वंचित रहेगा। इसी प्रकार से सभी मनुष्य अपने माता-पिता व आचार्यों के ऋणी होते हैं। हर सन्तान व शिष्य का कर्तव्य है कि वह अपने माता-पिता व आचार्यों की सेवा भली प्रकार से अवश्य करें। यदि नहीं करेंगे तो वह उनके ऋणी रहेंगे और जन्म-जन्मान्तर में उन्हें इनका ऋण चुकाना ही होगा। माता-पिता व आचार्यों की सेवा

करने से यह परम्परा बनेगी रहेगी जिसका लाभ भावी सभी माता-पिताओं एवं आचार्यों को मिलेगा। अतः मनुष्यों को वेदाध्ययन कर अपने इन कर्तव्यों सहित अपने अन्य सभी कर्तव्यों जो परिवार, समाज, देश व मानवता के प्रति हैं, उनका ज्ञान प्राप्त करना चाहिये व उन्हें यथाशक्ति करना चाहिये।

ऋषि दयानन्द जी ने एक अद्भुत् ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' लिखा है। इस ग्रन्थ को पढ़ने से मनुष्य को आध्यात्मिक व पारमार्थिक सभी प्रकार का यथार्थ ज्ञान होता है। इसके समान संसार में अन्य कोई ग्रन्थ नहीं है जिसमें सभी विषयों का यथार्थ ज्ञान हो। वस्तुतः सत्यार्थप्रकाश सभी मनुष्यों का धर्म ग्रन्थ है जिसमें मनुष्यों के सभी कर्तव्यों सहित सभी विषयों का ज्ञान दिया गया है। ईश्वर व जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान भी सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर हो जाता है। अतः सभी मनुष्यों को सभी प्रकार की धारणाओं व विश्वासों से ऊपर उठकर सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करना चाहिये और सत्य व परमात्मा द्वारा आविर्भूत वेदमत को स्वीकार करना चाहिये। वेदमत स्वीकार करने व इसका आचरण करने से मनुष्य का वर्तमान जीवन व परजन्म सुधरता है। मनुष्यों को यह जन्म एक सुअवसर है अपने इस जन्म व भावी जन्मों के दुःखों को दूर कर उसे सुखों से भरने का। इस अवसर को खोना नहीं चाहिये। यदि वह मत-मतान्तरों की सत्यासत्य व मिथ्या मान्यताओं में फंसे रहेंगे तो उनका कल्याण नहीं हो सकता। इस पर उन्हें अवश्य विचार करना चाहिये और ज्ञानी व्यक्तियों की सलाह लेनी चाहिये।

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, दृष्टि से अगोचर, सर्वव्यापक एवं सर्वान्तर्यामी सत्ता है। वह हमारे हृदय व जीवात्मा में कूटस्थ रूप से विद्यमान है। हमारे सभी कर्मों का साक्षी व द्रष्टा है। इसलिए हमें कभी भी अशुभ व पाप कर्मों को नहीं करना चाहिये। यदि करेंगे तो उसका फल हमें जन्म-जन्मान्तरों में अवश्य ही भोगना पड़ेगा। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

- १९६, चूक्खूवाला-२, देहरादून- २४८००१
चलभाष- ९४१२९८५१२१

वधू चाहिए

राजसमन्द, राजस्थान निवासी युवक (वशिष्ठ गोत्र), हेतु सुन्दर, सुशील, सुसंस्कारित वधू चाहिए। पूर्ण विवरण निम्न प्रकार है। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

Bio-Data

Name	:	Mr. Ankur Vashishtha
Date of Birth	:	14 Oct.1991
Time of Birth	:	4:22 AM (Monday)
Place of Birth	:	Bharatpur
Height	:	5 feet 7 inches
Weight	:	59 kg
Complexion	:	Medium
Address	:	66 Suncity, Bhilwara Road, Kankroli, Rajsamand
Cast	:	Gaur Brahmin

Educational & professional Detail

Qualification	:	B.Teach in Electrical engineering (RTU, Kota)
Occupation	:	Solar Engineer in core solar enterprises (Rajsamand)
Income	:	20500/- month

Family Detail

Father name	:	Sushil Kumar Vashishtha
Father' occupation	:	HM In Govt secondary school
Mother's name	:	Saroj Vashishtha
Sibling Detail	:	Two Sister, one brother

Skills & interest Detail

Skills	:	Realistic, Responsible Motivated, Efficient , Confident
Hobbies	:	swimming, reading, learning, new things
Father Mobile No	:	8114418658,9414833346
Email	:	contact.ank3@gmail.com

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी. एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ. मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर

आज हम प्रफुल्ल सिंह के अनिश्चितता के सिद्धान्त को सिद्ध करते हुए उस अनिश्चितता में से मध्य का मार्ग ढूंढेंगे और साथ ही अतिसंवेदनशीलता के विषय में भी जानेंगे। तो आइए शुरू करते हैं।

प्रफुल्ल जी कहते हैं,

'या तो आप संवेदनशील हो सकते हैं या सुखी हो सकते हैं। दोनों चीजें साथ-साथ घटित नहीं होतीं।'

अब यदि सोचा जाए कि सुखी कौन है? तो उत्तर मिलेगा, सुखी वो जिसके पास सुख है। तो सुख क्या है फिर?

असल में न सुख है, न दुःख है। सुख-दुःख तो मात्र एक विचार है। एक के लिए एक घटना दुःख का सन्देश लाती है, तो दूसरे लिए वही घटना भविष्य के लिए सुख की आहट देती है।

उदाहरण के लिये शहर में डेंगू फैला। यह खबर दुःखदायी, भयंकर और हैरान करने वाली महसूस होती है। कोई दोष

अनिश्चितता (संवेदनशीलता) के सिद्धान्त

लोगों को देगा तो कोई नेताओं को, तो कोई सफाई कर्मचारियों इत्यादि को। परन्तु कितने लोगों की जिन्दगी बन जाएगी, यह बहुत कम लोग देखते हैं। डेंगू फैला तो बकरी का दूध बेचने वालों की, पपीता बेचने वालों की, डॉक्टरों की, लैब वालों की, और उनके साथ अनेक लोगों की तो पौ-बारह हो जाएगी। अक्सर ये सोचती हूँ कि जो अन्तिम संस्कार का सामान बेचता होगा उसके घर में खुशी कब आती होगी। वह भी जब अपने गल्ले की आरती करता होगा तो कहता होगा कि 'सुख संपत्ति घर आवे'। कब आएगी उसके घर में सुख संपत्ति? कब आएगा उसके जीवन में आराम? जब शहर में ज्यादा मृत्यु होंगी।

तो अब प्रश्न उठता है यदि सुख या दुःख जैसी चीजें हैं ही नहीं तो फिर सुखी कौन हुआ और कैसे?

वास्तविकता में अगर देखा जाए तो सुखी वो है जिसके पास मानसिक शान्ति और स्थिरता है।

तो क्या संवेदनशीलता के साथ मानसिक शान्ति और स्थिरता सम्भव नहीं?

नही! बिल्कुल नही क्योंकि एक संवेदनशील व्यक्ति दुनिया जहाँ के तमाम छोटे-बड़े सुख-दुःख से प्रभावित होता है। अगर आप एक संवेदनशील हैं तो समाज में फैली अव्यवस्था, छल-कपट, अन्याय को देखकर आपका प्रभावित होना स्वाभाविक है। ऐसे में जीवन में शान्ति और स्थिरता का आना असम्भव है।

अतः ये बात शैल के अनिश्चिता के सिद्धान्त को सिद्ध करती है कि व्यक्ति एक समय पर या तो सुखी (शान्त और स्थिर) रह सकता है या फिर संवेदनशील। तो क्या जो व्यक्ति संवेदनशील है वो कभी सुखी (शान्त और स्थिर) नहीं रह सकता? क्या इसमें बीच का कोई रास्ता नही?

देखिए जीवन में शान्ति और स्थिरता लाने के लिए दो ही रास्ते हैं।

पहले के लिए आपको अपनी संवेदनशीलता को त्याग कर उदासीन होना पड़ेगा। जिससे आप पर सुख दुःख का कोई प्रभाव ना पड़े। पर ये मनुष्यता के लिए ठीक नहीं। मनुष्य में संवेदनाएँ हैं तभी वो मनुष्य है। पर इसके लिए व्यर्थ की चिन्ताओं से खुद को कुंज करते जाना भी ठीक नहीं। तो ऐसे में या तो स्वार्थी बनें और उदासीन हो जाएँ या फिर संवेदनशीलता की अग्नि में जलते रहें।

इस पहले विकल्प के अतिरिक्त एक विकल्प और है जिसमें आप संवेदनशील तो रहेंगे पर आपकी संवेदनशीलता आपको क्षति नही पहुँचायेगी और वो विकल्प है अध्यात्म और दर्शन का विकल्प। यहाँ अध्यात्म का अर्थ संन्यास लेने से बिल्कुल नहीं है। अध्यात्म का अर्थ है जीवन को यथार्थ से देखना। आत्मचिन्तन करना। खुद की, शान्ति की और

स्थिरता की खोज करना।

संवेदनशील इंसान के लिए यह दुनिया तकलीफदेह हो जाती है। अगर आप पूरी तरह से बेखबर हैं, तो ठीक है। अगर आपको ज्ञान प्राप्ति हो चुकी है, तब यह बहुत ही सुन्दर बात है, लेकिन इन दोनों स्थितियों के बीच में होना कष्टकर है

क्योंकि इसी स्थिति में आपकी संवेदनशीलता आपको क्षति पहुँचाती है। ये ठीक वैसा है जैसे कभी कभार हमें कोई खरोच लग जाती है और हमें पता भी नहीं चलता। जब तक हमें खबर नहीं रहती हम नार्मल रहते हैं वहीं जैसे ही पता चलता है कि अरे ये खरोंच कब लगी, इसमें से तो खून निकल रहा है, तब हम परेशान हो जाते हैं। पर जब स्थिति का पूरा ज्ञान होता है कि ये बस जरा सी खरोंच हैं और सब ठीक हो जायेगा तब हम फिर स्थिर हो जाते हैं। सभी प्राणियों में अनुभूति की क्षमता होती है। जब तक जीवित हैं आन्तरिक और बाह्य वस्तुस्थिति हमारी अनुभूति का कारण बनती हैं। व्यक्ति जितना संवेदनशील होगा उसकी अनुभूति उतनी ही प्रबल होगी। और यही अनुभूति ही उसके सुख दुःख का कारण बनती है।

एक बार आपने यदि साक्षी भाव से संसार की हर घटना को देखना शुरू कर दिया तो भयंकर से भयंकर दुःख में भी आप डोलेंगे नहीं। इसलिए आध्यात्मिक प्रक्रिया और आत्मचिन्तन बहुत जरूरी है। दर्शन और अध्यात्म आपके नजरिए को जरूरी नहीं कि बदल दे पर ये जरूर है कि वो आपके दृष्टिकोण को बृहत् करता है। जब आप आत्मचिन्तन करेंगे तो ये चीजे खुद ब खुद आप पर खुलेंगी और अध्यात्म इसी आत्म चिन्तन का नाम है खुद को जानने का मार्ग है। और इसके लिए आपको अपनी संवेदनशीलता भी नहीं खोनी पड़ेगी।

एक विशेष बात और कि संवेदन शीलता और अति संवेदन शीलता में अन्तर समझें। संवेदनशीलता भली है, ये एक मानवीय गुण है पर अतिसंवेदनशीलता रोग है। संवेदनशील होना अर्थात् किसी की परेशानी में कष्ट होना अच्छी बात है, पर कोरी संवेदनशीलता से किसी को लाभ नहीं होता। कोरी संवेदनशीलता से मेरा तात्पर्य है कि किसी की परेशानी में आप कुछ न करें या कर न पा रहे हों तो भी दुःखी बने रहें। आप किसी से जितना जुड़े होते हैं उतना ही उसका कष्ट बड़ा लगता है, उतने ही आप संवेदनशील होते हैं, परन्तु कहीं कोई दुर्घटना, प्राकृतिक आपदा या आतंकवाद घटता है तो वह हमारी संवेदनाओं को छूकर निकल जाता है, हम फिर सामान्य हो जाते हैं। और ऐसा होना भी चाहिये, क्योंकि हमारी सीमायें हैं जिनके बाहर जाकर हम हरेक की मदद तो कर नहीं सकते। इस दुनिया में रोज कुछ अच्छा, कुछ बुरा होता रहता है, सुख-दुःख आते-जाते हैं। कुछ लोग ये बात नहीं समझते और कहीं भी कुछ भी गलत होता है तो दुःखी हो जाते हैं, सामान्य रहने में उन्हें ग्लानि होती है, ऐसी संवेदनशीलता को अतिसंवेदनशीलता कहते हैं। जिसके कारण ऐसे लोगों को चारों ओर निराशा और अंधकार नजर आने लगता है। यह स्थिति धीरे-धीरे अवसाद (depression) का रूप ले सकती है। एक नेक इंसान को उतना ही संवेदनशील होना चाहिये कि वह कष्ट की घड़ी में यथासम्भव किसी की मदद करे परन्तु ऐसा करना यदि उनके वश में न हो तो उसके बारे में सोच-सोच कर दुःखी या उदास न हों। संवेदनशील इंसान दुर्घटना के समय उपस्थित होगा तो वह मदद करेगा, अनदेखा करके वहाँ से नहीं जायेगा।

व्यक्तित्व के गुणदोषों का समन्वय जीवन में ठहराव लाता है। कोई व्यक्ति अगर अपनी संवेदनशीलता को पहचान कर उसे सही स्तर पर लाना चाहे तो वह ऐसा कर सकता है, कोशिश करे कि जब लगे अतिसंवेदनशील हो रहा है तो स्वयं को निर्देश (auto suggestion) दे कि नहीं इस बात पर ध्यान नहीं देना है, खुद को दूसरे कामों में व्यस्त करलें। संवेदनहीन व्यक्ति अपने को निर्देश दे कि किसी को कष्ट में देखेगा तो वह उसकी मदद अवश्य करेगा, मौके से भागेगा नहीं। अपनी संवेदनशीलता को व्यक्ति पहचान सके, यह लेख लिखने का एक उद्देश्य यह भी है। अपनी संवेदनशीलता को सही स्तर पर लाना इतना सरल भी नहीं है, इसके लिये किसी मनोवैज्ञानिक की मदद ली जा सकती है। अति संवेदनशीलता अनिन्द्रा (insomnia), तनाव , अवसाद, व्याकुलता का कारण बन सकती है।

प्रफुल्ल सिंह 'बेचैन कलम'
Email : prafulsingh90@gmail.com

सद्धर्म के उपदेष्टा दयानन्द

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

स्वामी दयानन्द को सर्वदा इस बात का गर्व रहा कि उनका जन्म आर्यावर्त्त देश में हुआ किन्तु सत्यासत्य और मानव कल्याण की दृष्टि से उन्होंने किसी देश विशेष के साथ पक्षपात नहीं किया। स्वामी दयानन्द के अनुसार आर्यों से पूर्व इस देश में कोई मनुष्य बसता नहीं था। प्रथम मानवीय सृष्टि हिमालय की गोदी में हुई। आबादी बढ़ने के बाद वे मैदानी इलाकों में उतरे और वे सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों से सिंचित प्रदेशों में बस गये। इस देश का नाम 'आर्यावर्त्त' रखा। युगों तक वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति का बोलबाला रहा। महाभारत काल के बाद आर्यों के गौरव और उत्थान की यवनिका का पतन हो गया, क्योंकि महाभारत का समय आर्यों के अत्यन्त अद्यःपतन का समय बन गया था।

महाभारत का युद्ध परस्पर की कलह, द्वेष और दुराग्रह का युग है। श्री कृष्णजी के सहयोग से भी यह युद्ध टल न सका। तब जो विनाश हुआ है उससे आज तक भारतवर्ष पनप नहीं पाया। वर्णाश्रम धर्म जो एकसूत्रता के लिए थे, विघटन के कारण बने। मन्दिर बने, अवतार बने, पुजारी और महन्त बने, सम्प्रदाय बने, हम पतित और विघटित होते चले गए। विदेशियों के आक्रमणों ने देश को सभी प्रकार से खण्डित कर डाला। पिछले एक हजार वर्षों में बाहर से जो आक्रामक आये वे पैगम्बर धर्म लेकर आये। देश में नई समस्यायें उत्पन्न हो गईं और आर्यावर्त्त देश हर बात में पिछड़ गया। सम्प्रदायवाद ने अनैतिकता की नींव डाली और देश के लोग व्यापार में, धर्म-कर्म में और शासन में भी एक दूसरे को छलने और ठगने लग गए। स्वामी दयानन्द पुनर्जागरण युग के, आधुनिक भारतीय इतिहास के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने आर्यावर्त्त की इस दुर्गति को समझने का प्रयास किया और हमें राष्ट्रीयता का नया आलोक दिया।

नये युग के द्रष्टा

उन्नीसवीं शती के भारत की पूरी परिस्थिति को सामने रखा जाये तो एक ओर हिन्दू समाज की विश्रृंखलता और मूल्यों के क्षेत्र में व्यक्ति निष्ठा का प्राधान्य था, तो दूसरी ओर इस्लाम कुछ शताब्दियों तक विजेताओं और शासकों का धर्म रहने के कारण अपनी पराभूत अवस्था में भी हिन्दू समाज से अंग्रेजों की विदेशी शक्ति के विरुद्ध मिलने की मानसिकता नहीं रखता था। अंग्रेजों ने आगे इसका लाभ ही नहीं उठाया, वरन् इस अलगाव को गहरे विरोध में परिणत किया। ईसाई धर्म शासकों के संरक्षण में हिन्दू समाज की कमजोरियों का लाभ उठा रहा था। इस समय हिन्दू समाज निहित स्वार्थ के व्यक्तियों और वर्गों से हर तरह पीड़ित और शोषित था, अन्य धर्मों के सामने असुरक्षित भी। छूआ-छूत, वर्ण-व्यवस्था अत्यन्त विकृत रूप, मंदिरों, तीर्थों में पाखण्ड और ठगी, कुरीतियाँ आदि हिन्दू समाज में व्यापक रूप में छा गए थे। चारों ओर नैतिक मूल्यों की अवहेलना हो रही थी, समाज का मानवीय मूल्यों का आधार समाप्त हो चुका था। ऐसा मूल्य विहीन, विश्रृंखलित और विघटित हिन्दू समाज राजनीतिक तथा आर्थिक स्तर पर विदेशी शासक के सामने टिक नहीं सकता था, फलतः कमजोर होता गया। अंग्रेज हिन्दुओं के पाखण्ड और मुसलमानों की स्वार्थपरता का लाभ उठाकर अपनी शक्ति और प्रभाव को बढ़ाते गए।

स्वामी दयानन्द में भारतीय हिन्दू समाज की जड़ता और विकृतियों की पहचान सहज भाव से उत्पन्न हुई। शिवलिंग पर दौड़ते हुए चूहों से उस बालक के मन में जो कुछ घटित हुआ, वह साधारण नहीं था। भारतीय समाज के अन्दर सैंकड़ों वर्षों से जमी हुई जड़ता इस प्रकार उस द्रष्टा के मन में क्रौंध गई। फिर वह उस परिवेश से मुक्त होकर सत्य की खोज के लिए

निकल पड़ा। उसके सामने दूसरा विकल्प नहीं था। वर्षों तक उसे सत्य के अनुसन्धान के लिए भटकना पड़ा। नदी-नाले, घाट-दर्रे, पर्वत-शिखर चारों ओर भटकता रहा, पंडितों से शास्त्रों का अध्ययन किया, योगियों से उसने योग सीखा। पर उसके सामने एक ही लक्ष्य था- भारतीय हिन्दू समाज को इस अन्धकार से प्रकाश में किस प्रकार लाया जाए। कुरीतियों, कुसंस्कारों, जड़ताओं, अन्धविश्वासों से कैसे मुक्त किया जाए? यह लक्ष्य उनके सामने से कभी ओझल नहीं हुआ।

अन्ततः स्वामी विरजानन्द जी के पास उसने अध्ययन किया। गुरु-शिष्य ने एक दूसरे को पहचाना, जैसे दोनों को एक दूसरे की तलाश थी। शिष्य शास्त्रों के अध्ययन के बाद गुरु की

दक्षिणा देने के लिए प्रस्तुत हुआ। गुरु ने दक्षिणा मांगी- जाओ सत्य का प्रचार करो और अन्धकार दूर कर अपने समाज की सेवा करो। शिष्य निकल पड़ा, उसने जीवनभर गुरु दक्षिणा चुकाई। स्वामी दयानन्द का व्यक्तित्व खण्डन-मण्डन प्रधान जान पड़ता है, क्योंकि ऐसा प्रक्षेपित किया गया है। पर यह सही नहीं है। अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुसंस्कार, स्वार्थपरता के अन्धकार को दूर करने के लिए यह मार्ग अपनाना अनिवार्य था। इसी प्रकार दूसरे धर्मों की जड़ताओं और अन्धविश्वासों को भी उजागर करना जरूरी था, तभी समाज का स्वस्थ और गतिशील निर्माण सम्भव हो सकता था।

धर्म और सम्प्रदाय की अवधारणा

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की कल्पना की। यह उनकी सूक्ष्मदृष्टि का परिणाम है। उन्होंने इसे 'आर्य धर्म' नहीं कहा, पारम्परिक हिन्दू समाज से अलग होकर सम्प्रदाय या धर्म के नाम पर 'आर्य समाज' को चलाने की चेष्टा नहीं की। उनका उद्देश्य पूरे भारतीय समाज को एक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक धारावाहिक इकाई के रूप में परिभाषित और संगठित करने का था। साथ ही उनका प्रयत्न था कि यह समाज कुसंस्कारों से, जड़ताओं से, मिथ्या कर्मकाण्डों से मुक्त होकर शुद्ध मानवीय मूल्यों के आधार पर गतिशील हो। यहाँ स्वामीजी 'आर्य' शब्द को जाति अथवा धर्मवाचक न मानकर श्रेष्ठता वाची मानते हैं और उनके अनुसार जो भी श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का आचरण करता है, वह आर्य है। उन्होंने जाति, वर्ण, धर्म के परे ऐसे समाज की कल्पना की जो इन मूल्यों का जीवन बिताने के लिए प्रयत्नशील हो।

उन्होंने यह अनुभव किया होगा कि जब-जब समाज को मूल्योन्मुखी करने का प्रयत्न किसी विशेष संगठन के नाम पर किया जाता है तो आगे चलकर नामधारी धर्म या सम्प्रदाय प्रमुख हो जाता है और मूल्य गौण हो जाते हैं, यहाँ तक कि वे विकृत और भ्रष्ट हो जाते हैं। स्वामी जी ने इसी कारण अपने आन्दोलन को ऐसा नाम नहीं दिया। यही नहीं उन्होंने वैदिक धर्म की व्याख्या को, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं को स्थापित करने का प्रयत्न किया तब नाम देने का आग्रह नहीं किया। अपनी व्याख्या में उन्होंने पूरा प्रयत्न किया कि भारतीय धर्म दर्शन, आध्यात्म के उन तत्वों को उजागर किया जाये जो व्यक्ति और समाज को ऊँचे मूल्यों के स्तर पर प्रतिष्ठित और विकसित करते हैं और ऐसे अंशों, पक्षों और तत्त्वों को अवैदिक अर्थात् जो श्रेष्ठ मूल्यों के विपरीत पड़ते हैं। यह मूल दृष्टि साधारण व्यक्ति की नहीं है, सूक्ष्म दिव्य स्रष्टा की है, जो साधारण अर्थ में सही-गलत, पक्ष-विपक्ष, सम्प्रदाय और मत-मतान्तर को स्वीकार नहीं करता वरन् अपने समाज को मानवीय मूल्यों की उच्चस्तरीय भूमिकाओं की ओर प्रेरित करने की दृष्टि से केवल सत्य को ग्रहण करता है।

स्वामी दयानन्द ने वेद और उपनिषदों को स्वीकार किया। उपनिषदों में भी केवल प्राचीन उपनिषदों को। वेदों की प्राचीन व्याख्या-पद्धति अपनाई तथा पुराणों के बृहद् साहित्य को प्रमाण की दृष्टि से अस्वीकार कर दिया। धार्मिक और सामाजिक संस्कारों तथा कर्मकाण्डों से एक विशिष्ट वर्ग के रूप में स्वार्थी पुरोहितों को हटा दिया। समाज के द्वारा पूजा पाने वाले और मात्र आशीर्वाद देने वाले साधुओं-संन्यासियों को भी उन्होंने समाज में स्वीकृति नहीं दी, उन पर समाज की सेवा, शिक्षा और उनके उन्नयन का दायित्व रखा, अन्यथा अपने गृहस्थ आश्रम के कर्तव्य को निभाने के बाद व्यक्ति को वानप्रस्थ आश्रम में समाज की सेवा और शिक्षा का दायित्व निभाना अपेक्षित है। संन्यास आश्रम में आत्मोन्नयन के साथ व्यक्ति का अपने समाज को उच्चादर्शों की ओर प्रेरित करना कर्तव्य है। इन मान्यताओं के पीछे गहराई से देखने पर स्वामी जी के पूरे भारतीय समाज के इतिहास को समझकर भविष्य को देखने वाली सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त है। पुरोहित गृहस्थ के समााजिक दायित्व और उच्चदर्शों का पथ-प्रदर्शक नहीं रह गया था, जो उसका दायित्व था। वह निहित स्वार्थ होकर एक वर्ग बन गया था। इसने सत्ता की प्रतिद्वंद्विता में कुटिल दांव लगाये। समाज पर प्रभुत्व जमाने के लिए अनेक प्रकार के निरर्थक कर्मकाण्डों को जन्म दिया, नानाविध अन्धविश्वासों को प्रश्रय दिया। अतः

स्वामी जी ने यज्ञ-विधान और संस्कार पद्धतियों के लिए सम्मानीय गृहस्थ को, स्त्री या पुरुष को अधिकार प्रदान किया और हर अवसर पर सम्मिलित रूप से कर्तव्यों और मूल्यों को स्मरण करने का विधान किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म (भारतीय धर्म के रूप में) और संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से और उसके वर्चस्व को स्थापित करने के लिए अन्धविश्वासों, कुसंस्कारों, कुरीतियों, जड़ताओं पर प्रहार किया। साथ ही दूसरे धर्मों की इसी स्तर पर कड़ी आलोचना की, क्योंकि उनकी मान्यता थी कि धर्म भी कट्टर पन्थ, अंधविश्वासी और निहित स्वार्थियों के द्वारा नियंत्रित है। ध्यान देने की बात है, वे धर्मों में सामंजस्य स्थापित करने के पक्षधर थे। उन्होंने अन्य धर्मावलम्बियों के

नेताओं से इस सम्बन्ध की चर्चाएँ भी कीं। उनका दृष्टिकोण था कि अगर विभिन्न सम्प्रदाय मूल मानवीय धर्म को स्वीकार करके चलें तो वे कुसंस्कारों और जड़ताओं से मुक्त होकर मूल्यों पर प्रतिष्ठित रह सकते हैं और आपसी वैमनस्य से मुक्त हो सकते हैं। पर हर धर्म-सम्प्रदाय में निहित स्वार्थी वर्ग इतना प्रबल है कि वह स्वामी जी की दृष्टि को न समझ सकता था और न उनके विचारों को मान सकता था। फलतः अनेक सम्प्रदायों के धर्माचार्य स्वामी जी के सुझाव से सहमत न हो सके। स्वामी जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समझने के लिए उनके इस पक्ष को दृष्टि में रखना आवश्यक है। उनके व्यक्तित्व की प्रेरणा के कारण राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रारम्भ से आर्य समाज को मानने वाले तमाम लोग रहे हैं। उनकी स्वयं की दृष्टि राष्ट्रीय रही है, देश को स्वाधीन करने के बारे में और देश के मूल्यों के स्तर पर उन्नत और संगठित करने के लक्ष्य से भी। स्वामी जी के अनुसार देश में सामाजिक जीवन को संगठित तथा उन्नत मूल्यों पर प्रतिष्ठित करना बहुत आवश्यक है, राष्ट्रीय स्वाधीनता उसके आधार पर प्राप्त करना न केवल आसान है वरन् उसे सुरक्षित रख देश को विकसित करना भी अधिक सरल है।

राष्ट्रीय एकता और मत मतान्तर

कतिपय बुद्धिजीवियों का आरोप है कि स्वामी दयानन्द द्वारा नानक पन्थ की आलोचना किए जाने से पंजाब में हिन्दू-सिख एकता में दरार पैदा हुई। इस प्रकार के आरोपकर्ता स्वयं में साम्प्रदायिक सोच के व्यक्ति हैं। क्योंकि स्वामी जी ने नानक पन्थ से कहीं अधिक कड़ी भाषा में विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों की खबर ली है। अतः स्वामी जी की सोच में न तो साम्प्रदायिकता है और न ही एकता को भंग करने की (मंशा) आकांक्षा। वे तो भारतीय और अभारतीय दोनों प्रकार के सम्प्रदायों के अन्धविश्वासों, रूढ़ियों तथा पाखण्डों का खण्डन करके बौद्धिक तर्कयुक्त वैज्ञानिक विचार की प्रतिष्ठा चाहते हैं। कबीर, नानक आदि मध्यकालीन सन्तों ने अपने-अपने समय में हिन्दू धर्म के पाखण्डों का तीव्र खण्डन किया है। इस प्रकार के समाज सुधारक सन्तों का अभिप्राय मानव समुदाय को गलत रास्तों से हटाकर प्रशस्त पथ पर चलने की प्रेरणा देना रहा है। स्वामी जी का स्थान मध्यकालीन सन्तों तथा दार्शनिक विचारकों से तनिक भी कम नहीं है। अतः उन पर किसी 'सम्प्रदाय विशेष' का विरोधी होने का आरोप स्वयं में एक निन्दनीय प्रयास है। इस सन्दर्भ में 'कौंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इण्डस्ट्रियल रिसर्च' के भूतपूर्व महानिदेशक भारतीय विज्ञान संवर्द्धन संस्था के अध्यक्ष, देश के गणमान्य वैज्ञानिक स्वर्गीय डॉ. आत्माराम द्वारा स्वामी जी के खण्डन-मण्डन परक व्यक्तित्व तथा कार्य का मूल्यांकन उल्लेखनीय है- 'समय की पुकार है कि समाज में बड़ी गहराई तक व्याप्त अन्धविश्वासों को जड़ से उखाड़ फेंका जाए और स्वामी जी का अन्धविश्वास को दूर करने का सन्देश घर-घर पहुँचाया जाए। उनकी एक यही उपलब्धि आइन्सटाईन, गैलीलियो, न्यूटन की उपलब्धियों से किसी भी तरह कम नहीं। इसमें वैज्ञानिक तत्त्व है जो सार्वभौम है। स्वामी जी को एक धार्मिक पथद्रष्टा व समाज प्रवर्तक ही समझा जाता है। किन्तु उनका दृष्टिकोण और विचारधारा मूलतः वैज्ञानिक तर्कों पर आधारित थी। मेरे विचार से वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने विज्ञान के आधार पर अन्धविश्वासों पर प्रहार किया और उन्हें दूर करने में बहुत कुछ सफल भी हुए। अन्धविश्वास का अन्धेरा छाँटने के लिए स्वामी जी ने बार-बार उन पर प्रकाश डाला है। उन्होंने सभी धर्मों के पाखण्डों पर, पोप- लीलाओं पर जमकर चोट की है। एक सच्चे वैज्ञानिक की तरह स्वामी जी ने बिना अपने पराये का भेद किए तमाम धार्मिक विश्वासों पर जमी हुई काई हटाने का पूरा प्रयास किया। भले ही किसी विज्ञानशाला में वे पढ़े न हों, भले ही किसी वैज्ञानिक से दीक्षा न ली हो, भले ही किसी प्रयोगशाला में रिसर्च न की हो, मेरे विचार से स्वामी जी गैलीलियों की अपेक्षा कहीं ऊँचे स्तर के वैज्ञानिक थे। गैलीलियों

में वह निर्भीकता नहीं थी, स्वामी जी में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कूट कूट कर भरा हुआ था।'

अनैतिकता और अन्धविश्वासों के साथ समझौता नहीं

स्वामी दयानन्द इस युग के इस बात के एकमात्र प्रवर्तक थे, जिन्होंने कहा कि हम सब आपस में बैर भाव को त्याग कर,

सत्य वैदिक आस्थाओं का स्वीकार कर सत्य का ग्रहण और असत्य का प्रतिवाद करें। अनैतिकता और अन्धविश्वासों को मत-मतान्तरों से निकाल दें, तो सभी मनुष्य एक सार्वभौम मंच पर मानवमात्र की सेवा कर सकते हैं।

बींसवीं शती में मनुष्य मात्र का एक गणित है, सबका एक रसायन शास्त्र है, एक प्राणि शास्त्र है, एक भौतिकी और एक शिल्प है। इसी प्रकार वेद और वेदांग के अति प्राचीन युग में ज्ञान-विज्ञान मानवमात्र का एक था। हिन्दू गणित, अरब ज्योतिष, यूनानी तर्कशास्त्र और चीनी या मिश्री तत्वज्ञान ऐसे शब्द मध्ययुग में प्रचलित हुए। तब प्राचीन ऋषियों की परम्परा में विश्व के सभी विद्वान् और तत्त्वज्ञानी सत्य और ज्ञान को समझने में संकीर्णताओं को छोड़कर सत्य धर्म के सिद्धान्तों में एक हो जायें।

भारत में अन्धविश्वासों के पोषण और समर्थन का काम हिन्दू धर्म के ठेकेदार कर रहे हैं। अन्य देशों में ईसाई और मुसलमान भी इन्हीं अन्धविश्वासों का पोषण ओर समर्थन कर रहे हैं। आर्य समाज, महर्षि दयानन्द और आर्षकालीन प्राचीन परम्पराएँ इन मान्यताओं का न तो पोषण करती थीं, न समर्थन। हम तुम्हारे और तुम हमारे असत्यों, अन्धविश्वासों ओर अनैतिकताओं का विरोध न करो इस प्रकार के समन्वय की बात करना पतनोन्मुख होना है। आर्य समाज का दृढ़ संकल्प है कि किसी भी स्थिति, देशकाल या अवस्था में किसी के अन्धविश्वास, असत्य और अनैतिकता के साथ वह साझा हो सकते हैं किन्तु मंदिर, मस्जिद, गिरजें, कबरें, अवतार, पैगम्बर, मूर्ति और छल कपट पूर्ण चमत्कारों पर एकता नहीं हो सकती। अपने देश में हिन्दुओं को इस बात पर पूरी तरह विचार करने की आवश्यकता है।

आर्य समाज भारतवर्ष में अपने को किसी भी राष्ट्रीय अंग से पृथक् नहीं करना चाहता। वह सबका हितैषी है, चाहे वह किसी प्रदेश का क्यों न हो। किन्तु अन्धविश्वासों और रूढ़ियों को तोड़े बिना, परम्परा से चली आ रही रस्म-रिवाजों और आस्थाओं को शुद्ध और पवित्र किए बिना हम अपने राष्ट्र का संगठन नहीं कर सकते। अनैतिक और अन्धविश्वासी तत्त्वों के साथ समझौता करने से राष्ट्रीय एकता सम्भव नहीं है।

पिछले एक हजार वर्ष से भारत में भारतीयों के बीच मुसलमानों का कार्य आरम्भ हुआ। सन् ६०० ई. से लेकर १६०० के बीच में दस करोड़ भारतीय मुसलमान बन गए। अर्थात् १०० वर्ष में एक करोड़ व्यक्ति मुसलमान बनते गए और प्रतिवर्ष एक लाख भारतीय मुसलमान बन रहे थे। पिछले दो सौ वर्षों में भारत में ब्रिटिश राज्य का आधिपत्य होने पर इसी गति से भारतीय हिन्दू ईसाई भी बनने लगे। इस धर्म परिवर्तन का आभास न किसी हिन्दू राजा को हुआ, न किसी धार्मिक हिन्दू नेता को। भारतीय जनता ने अपने समाज के संगठन की समस्या पर इस दृष्टि से कभी सूक्ष्मता से विचार नहीं किया था। पंडितों, विद्वानों, मंदिर के पुजारियों के सामने यह समस्या राष्ट्रीय दृष्टि से प्रस्तुत ही नहीं हुई।

पिछले एक हजार वर्ष के इतिहास में स्वामी दयानन्द अकेले ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने इस समस्या पर विचार किया। उन्होंने दो समाधान बताए- पहला भारतीय समाज सामाजिक कुरीतियों से आक्रान्त हो गया है और दूसरा समाज का फिर से परिशोधन आवश्यक है। भारतीय सम्प्रदायों के कतिपय कलंक हैं, जिन्हें दूर न किया गया, तो यहाँ की जनता मुसलमान बनती ही रही है, आगे तेजी से ईसाई भी बनेगी। हमारे समाज के कतिपय भयंकर कलंक ये थे-

१. मूर्ति पूजा और अवतारवाद।
२. जन्मना जातिवाद।
३. अस्पृश्यता या छुआ-छूतवाद।
४. परम स्वार्थी व भोगी महन्तों, पुजारियों, शंकराचार्यों की गद्दियों का जनता पर आतंक।
५. जन्मपत्रियों, फलित ज्योतिष, अन्धविश्वासों, तीर्थों और पाखण्डों का भोली भाली ही नहीं शिक्षित जनता पर भी कुप्रभाव।

राष्ट्र से इन कलंकों को दूर न किया जायेगा, तो विदेशी सम्प्रदायों का आतंक इस देश पर रहेगा ही।

दूसरा समाधान स्वामी दयानन्द ने यह प्रस्तुत किया कि जो भारतीय जनता मुसलमान या ईसाई हो गई है उसे शुद्ध करके वैदिक आर्य बनाओ। केवल इतना ही नहीं, बल्कि मानवता की दृष्टि से अन्य देशों के ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैनी सबसे कहो कि असत्य और अज्ञान का परित्याग करके विद्या और सत्य को अपनाओ और विश्वबन्धुत्व की संस्थापना करो।

- अग्निर्ज्योतिः
चाणक्यपुरी, अमेठी- २२७४०५ (उत्तरप्रदेश)

स्वास्थ्य

मुँह सूखने की समस्या? दूर करने के आसान उपाय

आम तौर पर लोगों को जब कभी पानी पीने की आवश्यकता होती है वो शरीर में प्यास की इच्छा के रूप में परिलक्षित होती है। जब मुँह में सूखापन होता है तो यह माना जाता है कि अब शरीर को पानी की आवश्यकता है। प्रायः हमारे पास अनेक रोगी आते हैं जो कहते हैं कि मेरा मुँह हमेशा सूखा रहता है और कितना भी पानी पी लें फिर भी यह समस्या बनी रहती है।

वास्तव में यह एक ऐसी अवस्था है जिससे हम सभी कभी न कभी गुजरते हैं। लेकिन इसके निदान से अनभिज्ञ रहते हैं। चूँकि यह कोई गम्भीर बीमारी नहीं है इसलिए लोग इसके इलाज पर ध्यान नहीं देते हैं। फिर भी मेरे पास अनेकों प्रश्न इस समस्या के बारे में आ रहे हैं, तो सोचा कि आज इसी विषय पर चर्चा करी जाय।

१. किसी-किसी वृद्ध रोगी में यदि अनेक शारीरिक समस्याएँ हैं और वो अनेक दवाइयाँ खा रहा हैं तो उसके साइड इफेक्ट से भी मुँह सूखने की समस्या होती है। अतः आप उन दवाइयों की जगह सम्भव हो तो प्राकृतिक उपचार या आयुर्वेदिक उपचार लें जिससे यह समस्या उत्पन्न ही नहीं हो।

२. Anxiety, neurosis और कुछ साइकोलोजिकल बीमारियों में भी मुँह सूखने की समस्या देखी जाती है। इसलिए आप इसके कारण को दूर करें न कि ज्यादा दवा का सेवन किया जाय।

३. जो लोग तम्बाकू, मदिरापान और नशा करते हैं उनमें भी यह समस्या अधिकांश पायी जाती है। इसलिए नशीली वस्तुओं का सेवन बिलकुल न करें।

४. कुछ लोग विशेषकर बच्चे नाक की बजाय मुँह से सांस लेते हैं जिसके कारण वायु के आवागमन से मुँह सूखने लगता है। इसलिए नाक से सांस लेने की आदत डालें।

५. यह भी देखने में आया है कि अधिक मात्रा में नमक और मीठा खाने से भी मुँह सूखने लगता है इसलिए उपरोक्त पदार्थ सेवन करते समय ध्यान रखें।

६. मुँह की साफ सफाई पर विशेष ध्यान दें। दिन में कम से कम २ बार ब्रश करें जिससे खाने के बाद भोज्य पदार्थ दांतों में न चिपकें और मुँह सूखने कि समस्या न हो। खाने के तुरन्त बाद ब्रश करें।

७. दांत के रोग होने पर तुरन्त अपने डेंटिस्ट से मिलें और उसकी सलाह से इलाज करें।

८. यदि मुँह सूखने की समस्या काफी समय से बनी हुई है तो आप गुनगुने पानी में नमक मिलाकर दिन में ४-५ बार गरारे करें।

९. अगर आप दिनभर में कम से कम २-३ लीटर पानी पीते हैं तो यह समस्या आपको नहीं होगी।

१०. अनेक फल और सब्जियाँ ऐसी हैं जिनमें जलीयांश अधिक होता है। उनका सेवन करें। जैसे खीरा, ककड़ी, तरबूज इत्यादि।

११. अधिकांश चिकित्सक मुँह सूखने के लिए नारियल पानी का सेवन करने की सलाह देते हैं। नारियल पानी एक बहुत पौष्टिक पेय है। यदि आपके यहाँ यह आसानी से उपलब्ध है तो इसका सेवन अवश्य ही करें।

१२. मुलायम और अर्ध तरलीय खाद्य पदार्थों का सेवन अधिक करें जिससे मुँह सूखने न पाए।

१३. चाय और कॉफी जैसे पेयों का सेवन नहीं करें।

१४. गर्म और मसालेदार भोजन का सेवन नहीं करें।

१५. कुछ दवाएँ जैसे diuretics, antihistamines , decongestants आदि में भी मुँह सुखाने के गुण होते हैं अतः यदि आप इनका सेवन कर रहे हैं तो कोशिश करें कि आयुर्वेदिक उपायों से ही अपना रोग ठीक करें जिससे मुँह सूखने न पाए।

१६. इस समस्या के इलाज के लिए अनेक प्राकृतिक चिकित्सक भाप/वाष्प को सूंघने की सलाह देते है। यह भी एक अच्छा विकल्प है जिससे स्रोत खुलने लगते हैं।

- डॉ. स्वास्तिक जैन
प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, आयुर्वेदिक और यूनानी सेवाएँ
उत्तराखण्ड सरकार, जनपद हरिद्वार

याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी

आत्म कल्याण की साधक मैत्रेयी जिसने पति को चौंका दिया।

साधक केवल पुरुष ही नहीं महिला भी बन सकती है। याज्ञवल्क्य मुनि की पत्नी मैत्रेयी ने अपनी आत्मज्ञान पिपासा प्रकट करते हुऐ उन्हें चौका दिया और वह ऐसी विचारशील सात्विक तथा विशुद्ध परमार्थ भावना से आप्लावित मनोभूमि वाली पत्नी को पाकर जीवन को सफल मानते थे। दोनों लौकिक तथा पारलौकिक दिशा में एक दूसरे के पूरक थे।

ऋषि याज्ञवल्क्य (जिनका वस्त्र यज्ञ ही था) की दो पत्नियाँ थीं। बड़ी मैत्रेयी जो पूर्णतः आध्यात्मिक ज्ञान की जिज्ञासु तथा परम सात्विक प्रवृत्ति की नारी थी। ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने की उन्हें प्रबल अभिलाषा थीं। दूसरी कात्यायनी। वह सामान्य मनोभूमि की सांसारिक महिला थी।

वानप्रस्थ दीक्षा के लिए चलते समय मुनि ने दोनों को बुलाकर कहा जाने के पूर्व मैं अपनी सम्पत्ति तुम दोनों के बीच बराबर बराबर बाँट देना चाहता हूँ जिससे भविष्य में तुम दोनों सुविधापूर्वक प्रेम से रह सको।

मुनि का विचार सुनकर मैत्रेयी के नेत्र भर आये। उसने कहा- क्या ये सुख साधन, ये सम्पत्तियाँ मुझे वह सब कुछ दे सकेंगी जिसकी मुझे वांछा है? मैं सृष्टि का अन्तिम सत्य जान लेना चाहती हूँ। आत्मा का स्वरूप क्या है? वह किस मार्ग पर चलकर परमगति को प्राप्त कर सकती है? कृपया आप मुझे ज्ञान दें। ये भौतिक तथा नश्वर पदार्थ मेरे किस काम के?

ऋषि का हृदय मैत्रेयी की इच्छा सुनकर गद्‌गद् हो गया फिर भी उन्होंने कहा 'प्रिये तुम्हारा कथन अक्षरशः सत्य और उचित है, किन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम अपने हिस्से की सम्पत्ति रख लो। आखिर जीवन में सभी वस्तुओं की आवश्यकता होती है। वह तुम्हें काम आयेंगी।'

मैत्रेयी को द्रव्य की आकर्षण शक्ति विचलित न कर सकी। उन्होंने इतना ही कहा मैं इन धातु के टुकड़ों को लेकर क्या करूँगी। आप सच्चा ब्रह्मज्ञान ही मुझे प्रदान करें। वहीं मेरी वास्तविक सम्पत्ति होगा जो मेरा लक्ष्य तक पहुँचने में पाथेय बनेगा।

याज्ञवल्क्य ने पुनः कहा मैत्रेयी तुम आधा धन बांट कर ले लो। मैत्रेयी ने कहा इस धन से पूर्ण पृथ्वी को प्राप्त होकर भी क्या मैं मोक्ष को प्राप्त होऊँगी?

याज्ञवल्क्य- 'धन से मोक्ष की आशा नहीं करनी चाहिये। जैसे अन्य धनवान धन से जीवन व्यतीत करते हैं तुम वैसे ही अपनी जीवन सुख सुविधा से व्यतीत कर सकोगी।'

मैत्रेयी- 'जिस धन से मैं अमर नहीं हो सकती उस धन को लेकर मैं क्या करूँगी? जिसे प्राप्त करने से मैं जीवन मुक्त हो जाऊँ बस मुझे तो वही आत्मज्ञान का उपदेश चाहिए।'

याज्ञवल्क्य अपनी प्रिय पत्नी के उक्त कथनों से बहुत अधिक प्रसन्न हुये और वह अपनी योग्यतम विवेकशील तथा ब्रह्मवादिनी पत्नी को नित्य ज्ञान देते हुए असीम तृप्ति का अनुभव करने लगे।

इस प्रकार लौकिक तथा भौतिक सुखों की निःसारता को समझने वाली मैत्रेयी ने अपने पति से सम्पूर्ण आत्म विद्या, अनन्त अखण्ड परम तत्व का ज्ञान प्राप्त कर अत्यन्त आनन्द का अनुभव किया।

- साभार- जीने की कला

समाचार

आर्य वीरांगना एवं आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

श्री मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज/डीएवी एकेडमी टाण्डा के तत्वावधान में दिनांक २२ से २६ मई २०२२ तक आर्य वीरांगना एवं आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का अत्यन्त सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। २२ मई २०२२ को उद्घाटन समारोह के अवसर पर इस शिविर के संयोजक और मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज/डीएवी एकेडमी टाण्डा के प्रबन्धक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष माननीय आनन्द कुमार जी आर्य ने ध्वजारोहण के साथ शिविर को प्रारम्भ किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अयोध्या मण्डल के मण्डलायुक्त श्री नवदीप रिणवा उपस्थित थे। प्रशिक्षण का कार्य श्री हरि सिंह आर्य, श्री राजेश आर्य, आचार्य ओम प्रकाश शास्त्री, सुजीत कुमार और श्रीमती बबीता जायसवाल ने किया।

प्रेरणा दिवस का आयोजन

बीते दिनों दयानन्द सेवाश्रम द्वारा असम के बोकाजान में स्थित ओम प्रेम सुधा दयानन्द आर्य निकेतन में प्रेरणा दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बच्चो को सम्बोधित करते हुए जिले के डिप्टी कलेक्टर दिबंकर नाथ ने जीवन में आने वाले चुनौतियों को स्वीकार करने और उन का डट कर मुकाबला करने की शिक्षा दी। उन्होंने अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम द्वारा किये जा रहे कार्यों की भी जम कर सराहना की और अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इस अवसर पर अजय गोयल द्वारा शिक्षा के भविष्य की संभावनाओं के विषय में अपने विचार रखे। कार्यक्रम में डॉलर इण्डस्ट्रीज के चेयरमैन दीनदयाल गुप्ता, प्रेमसुध गोयल, सुषमा शर्मा, दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगिन्दर खट्टर और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य उपस्थित रहे। आप को बता दें कि ओम प्रेम सुधा दयानन्द आर्य निकेतन की स्थापना वर्ष २०१६ में हुई थी। इस का मुख्य उद्देश्य है दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों को विश्व स्तरीय शिक्षा सुविधा प्रदान करना। दयानन्द सेवाश्रम की इस टीम ने धन श्री, सुरुपथार, शान्तिपुर और दीमापुर में स्थित स्कूलों का भी निरिक्षण किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक

बीते दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में देश भर की सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों ने भाग लिया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान सुरेश चन्द्र आर्य की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में आर्य समाजों से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की गयी। सार्वदेशिक सभा द्वारा महर्षि दयानन्द जी की २००वीं जयन्ती और आर्य समाज की स्थापना के १५० वर्ष को पूरी दुनिया में भव्यता के साथ मनाने का निर्णय लिया गया। सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रकाश आर्य द्वारा रखे सभी प्रस्तावों के अनुसार जहाँ एक ओर देश की सभी आर्य समाजों में प्रान्तीय और स्थानीय स्तर पर आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत विभिन्न आयोजन किये जायेंगे। इस के बाद महर्षि दयानन्द जी की २००वीं जयन्ती और आर्य समाज की स्थापना के १५० वर्ष के कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। जो कि वर्ष २०२५ तक होते रहेंगे। इस बैठक में विशेष तौर पर उपस्थित जे.बी.एम. समूह के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र आर्य जी को महर्षि दयानन्द जी की २००वीं जयन्ती और आर्य समाज की स्थापना के १५० वर्ष के भव्य कार्यक्रम के आयोजन के लिए गठित समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। इस के आलावा देशभर में प्रादेशिक स्तर पर आर्यसमाज के प्रचारकों की नियुक्ति करने और प्रान्तीय स्तर पर आर्य वीर दल के अधिक से अधिक शिविर लगाने का भी सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया ताकि युवावर्ग और आम जनता तक आर्य विचारधारा को पहुँचाया जा सके।

हम सब के लिए गर्व का विषय

उदयपुर के नवलखा महल में आयोजित जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के पत्रकार सम्मेलन की बड़ी उपलब्धि यह रही कि महान् समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिस नवलखा महल में 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रन्थ लिखा। इसी तपोवन में जार का ऐतिहासिक कार्यक्रम हुआ जिसमें उदयपुर के वरिष्ठ पत्रकारों का सम्मान किया गया।

इसी महल में रहकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों के खातमे के लिए कार्य किया। राजाओं महाराजाओं और आजादी आन्दोलन के नेताओं में राष्ट्रवाद की भावना जागृत की। जार के आयोजन के जरिये इस ऐतिहासिक तपोभूमि की जानकारी मिली। इस पवित्र तपोस्थली के दर्शन करके हम सभी धन्य हुए हैं।

महल में आर्य समाज के विश्व प्रसिद्ध म्यूजियम में स्थापित स्थाई प्रदर्शनी का अवलोकन किया। यहाँ स्वामी जी के जीवन दर्शन को प्रदर्शित झांकियाँ, वेद विज्ञान, आर्य समाज के सिद्ध सन्तों, स्वतन्त्रता सेनानियों के चित्रों के साथ उनके इतिहास को दर्शाया हुआ है। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश ट्रस्ट के चेयरमैन श्रीमान् अशोक आर्य जी ने स्वयं गाइड के रूप में हमें आर्य पद्धति पर आधारित आर्य समाज के इतिहास की गौरवशाली प्रदर्शनी का अवलोकन करवाया। इस दौरान जार के सभी पदाधिकारी, सदस्य और पत्रकार मौजूद रहे।

जार उदयपुर टीम की ओर से आयोजित सम्मेलन से हम सभी को गौरव की अनुभूति हुई। इसके लिए उदयपुर टीम को साधुवाद। - 'जार'

गलवान घाटी में वीरगति पाने वाले वीर चक्र से सम्मानित लांस नायक दीपक सिंह की पत्नी रेखा सिंह सेना में लेफ्टिनेंट के पद पर भर्ती हुई हैं। वह मूल रूप से मध्य प्रदेश के रीवा की रहने वाली हैं। सैन्य

अधिकारी के तौर पर वो अपने पति के सपनों को पूरा करते हुए महिलाओं को सही राह दिखाना चाहती हैं। २८ मई २०२२ से उनकी ट्रेनिंग शुरू होगी। उनकी इस उपलब्धि पर रीवा के DM ने उनसे मिल कर बधाई दी है। ५ जून २०२० को गलवान घाटी में चीनी फौज के हमले के दौरान दीपक सिंह ने उनका बहादुरी से मुकबला किया था और वीरगति को प्राप्त हुए थे। दीपक सिंह ने घायल होने के बाद भी ३० सैनिको की जान बचाई थी। उन्हें मरणोपरान्त वीरचक्र दिया गया था।

शिक्षा विभाग में पोस्टिंग के बाद भी रेखा का मन सेना में भर्ती होने के लिए लगा रहा। वो इस दिशा में प्रयास भी करती रहीं। उनका सेना में भर्ती होने का पहला प्रयास विफल रहा लेकिन दूसरे प्रयास में उन्हें सफलता मिल ही गई।

गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ की प्रवेश-परीक्षा में बदलाव

गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला-झाल, टीकरी, मेरठ की प्रवेश-परीक्षाएँ २० मई से प्रारम्भ होकर २५ मई तक प्रतिदिन प्रातः ८ बजे और मध्याह्नोत्तर २ बजे से दो सत्रों में हुयीं। इस परीक्षा के माध्यम से ही नवीन ब्रह्मचारियों को इस आदर्श गुरुकुल में विद्याध्ययन का अवसर मिलेगा।

आपको बता दें कि गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ में अध्ययन के लिए नवआगंतुक विद्यार्थियों द्वारा यहाँ होने वाली प्रवेश-परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है, जिसका आयोजन लिखित और मौखिक दो रूपों में किया जाता है। यहाँ लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण अभ्यर्थी को ही मौखिक परीक्षा में सम्मिलित किया जाता है। विगत वर्षों में यह प्रवेश-परीक्षा जून के मास में होती थी, जिसे इस बार बड़े बदलाव के साथ मई मास में ही करने का निर्णय लिया गया।

गुरुकुल के आचार्य जी ने अभ्यर्थी की योग्यता को पूर्णतः स्पष्ट करते हुए कहा है कि गुरुकुल की प्रवेश-परीक्षा के लिए अभ्यर्थी को कक्षा पाँचवीं उत्तीर्ण होना चाहिए, प्रवेशार्थी की आयु ११ वर्ष से अधिक न हो और पूर्णतः स्वस्थ हो। प्रवेश-परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए आवेदन-पत्र के लिए विद्यार्थी और इसके पिता की फोटो तथा आधार कार्ड अनिवार्य है। इस परीक्षा का आयोजन कोरोना-१६ संक्रमण के प्रतिरोधी समस्त उपायों के साथ हुआ।

आर्य समाज डलहौजी छावनी एक ऐतिहासिक स्थल के रूप में उभरा

दिनांक २० मई २०२२ को आर्य समाज डलहौजी छावनी एक ऐतिहासिक स्थल के रूप में उभरा। शहीद राम प्रसाद बिस्मिल और अश्फाक उल्ला खाँ को समर्पित चित्र प्रदर्शनी का शहीद अश्फाक उल्ला

खाँ के पोते श्री अश्फाक जो शाहजहापुर से पधारे थे ने किया उद्घाटन।

आर्य समाज से स्नेह रखने वाले डलहौजी निवासी श्री अजय सहगल (IDES officer) के प्रयासों से रचा गया यह इतिहास।

श्री अश्फाक ने अपने सम्बोधन में आर्य समाज के आजादी में योगदान की चर्चा की, स्वामी दयानन्द जी से प्रेरणा प्राप्त क्रान्तिकारियों में पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल व शहीद अश्फाक उल्ला खाँ के जीवन के बहुत मार्मिक प्रसंग श्रोताओं को सुनाए, शहीद भगत सिंह व अन्य शहीदों को भी स्मरण किया।

चित्र प्रदर्शनी में शहीद बिस्मिल जी की प्रयोग की गयी वस्तुओं के चित्र और अश्फाक उल्ला खाँ की डायरी के पन्नों को व बिस्मिल की बहन शास्त्री देवी के पत्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से प्रेरणा प्राप्त क्रान्तिकारियों के चित्र भी शामिल हैं।

श्री नीरज महाजन, महामंत्री (आर्य समाज) ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री जगन ठाकुर-SDM डलहौजी व Col विजय अहलावत ने श्री अश्फाक का धन्यवाद किया। इस अवसर पर श्री विनोद महाजन, श्री बलदेव खोसला समेत कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री अजय सहगल के द्वारा किया गया।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०१/२२ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०१/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान-आर्य समाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर (हरि.), श्रीमती कंचन देवी सोनी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरि.), श्री हीरा लाल बलई; उदयपुर (राज.), श्री गणेश दत्त गोयल; बुलन्दशहर (उ.प्र.), श्री फूलचन्द यादव; मुरादनगर (उ.प्र.), श्री आर.सी. आर्य; कोटा (राज.), श्री जीवन लाल आर्य; दिल्ली।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ 16 पर अवश्य पढ़ें।

ईश्वर और ईश्वरकृत पुस्तक (कसौटी)

यस्मिन्वेदा निहिता विश्वरूपास्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम्।।

– अथर्व ४/३५/६

जिसमें (परमेश्वर में) समस्त शब्दमय ज्ञानरूप वेद निहित हैं उस कारणभूत तत्व से मृत्यु को तर लूँ।

पाठकवृन्द! गोद लिए पुत्र की पत्नी से विवाह उचित नहीं कहा जा सकता। वेद में किंचित मात्र भी अनैतिकता नहीं है। एक उदाहरण दृष्टव्य है-

उस (ईश्वर) की आज्ञा से, परायी स्त्री पुरुषों के साथ व्यभिचार को सर्वथा .... स्त्री पुरुष अपने अपने विवाहितों के साथ ऋतुगामी होवें।

– ऋग्वेद १/५०/३ के महर्षि दयानन्द कृत भाष्य से

ईश्वरीय शिक्षाएँ

(१) ईश्वर का मन्तव्य है और होना ही चाहिये कि उसकी समस्त प्रजा एक्य भाव से मिलजुलकर साथ साथ उन्नति करे। वेद में सर्वत्र ऐसा ही उपदेश मिलता है।

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।

– ऋग्वेद १०/१९१/३

भावार्थ– तुम्हारे विचार समान हों, तुम्हारी सभा एक हो, तुम्हारे मन एक हों, चित्त समान हो, मैं परमेश्वर तुम्हें सुप्रेरणा देता हूँ। मैं तुम्हें समान ऐश्वर्य से ऐश्वर्यशाली करता हूँ।

वेद में सबके कल्याण की कामना

हे जगदीश्वर! जो ऐश्वर्यशाली आप सबको सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करते हैं, उन (आपकी) सहायता से सब मनुष्य धनाढ्य होवें।

ऋग्वेद ७/४१/५ के महर्षि दयानन्द कृत भाष्य से।

यजुर्वेद ३/२६ में कहा है-

सब मनुष्यों को, अपने लिये, अपने मित्रों के लिये और सब प्राणियों के लिये सुख प्राप्त कराने को परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये।

परन्तु जो पुस्तक ईश्वरकृत नहीं हैं उनकी शिक्षा देखें-

(अ) 'और सारी पृथिवी पर एक ही बोली और एक ही भाषा थी। तब परमेश्वर ने कहा देखो! ये लोग एक ही हैं और उन सबकी एक ही बोली है। ..... आओ हम उतरें और उनकी भाषा को गड़बड़ावें जिससे एक दूसरे की बोली न समझें। तब परमेश्वर ने उन्हें वहाँ से सारी पृथिवी पर छिन्न-भिन्न किया....।' – तौ.प.११/आ१/४-६

(ब) सब जब तुम मिलो उन लोगों से कि काफिर हुए बस मारो गर्दनें उनकी यहाँ तक कि जब चूर कर दो.........।'

– मं.६/सि.२१/सू.४७/आ.४

वेद ईश्वर प्रणीत

अहं सत्यमनृतं यद्वदाम्यहं दैवीं परि वाचं विशश्च।

– अथर्व ६/६१/२

मैं ही सत्य-असत्य का भेद करके दैवी वाणी (वेदवाणी) को मनुष्यों को भरपूर बताता हूँ।

(१०) **असम्भव गप्पें**– ईश्वर सृष्टि का रचियता है। अपनी कृति को और उसके बनने की प्रक्रिया को रचियता से उत्तम कोई नहीं जानता। अतएव ईश्वरोक्त ज्ञान में इस सबका यथार्थ वर्णन मिलेगा जैसा कि वेद में है। परन्तु अन्य ग्रन्थों में असम्भव गपोड़ों का समावेश मिलता है। उदाहरणार्थ-

(अ) 'और एक बड़ा आश्चर्य स्वर्ग में दिखायी दिया, अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य पहिने है और चाँद उसके पाँवों तले है..... और उसकी (अजगर की) पूँछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींच के उन्हें पृथिवीं पर डाला।

– यो. प्र. प.१२/आ.१-४

(ब) जब मूसा ने अपनी कौम के लिए पानी माँगा हमने कहा अपना असा (दण्ड) पत्थर पर मार। उसमें से बारह चश्मे बह निकले। – म.१/सि.१/सू.२/आ.६०

(स) और दिखेगा तू पहाड़ों को अनुमान करता है तू उनको जमे हुए और वे चले जाते है मानिन्द चलते बादलों की, कारीगरी अल्लाह की........। – म.८/सि.२०/सू.२/७ आ.७७

(११) हमने पूर्व में लिखा है कि परमेश्वर जीवों के कर्मों का यथावत् फल देता है। किसी से प्रसन्न हो, विशेष अनुग्रह कर उसके पाप क्षमा कर देना उसका कार्य नहीं पर तथाकथित ईश्वरोक्त पुस्तकों में पाप क्षमा की बातें प्रचुरता से मिलती हैं। क्योंकि इसी लालच में भक्तजनों की भीड़ अनुगामी बनेगी।

(अ) '.... पाप की भेंट के लिए निसखोट एक बछिया को परमेश्वर के लिए लावें। – तौ.लैव्य व्य.प.४/आ.३

(ब) '....तो वह अपने किए हुए अपराध के लिए दो पिंडुकियाँ और कपोत के दो बच्चे परमेश्वर के लिए लावें।। और उसका सिर उसके गले के पास से मरोड़ डाले परन्तु अलग न करे। उसके किए हुए पाप का प्रायश्चित करे और उसके लिए क्षमा किया जायेगा। – तौ.लैव्य प.५/आ.७/१०/११

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

CARRY ON MISSY
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CHURIDAR | ANKLE LENGTH | CAPRI
Chitrangada Singh
Over 85 shades
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 June-2022 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

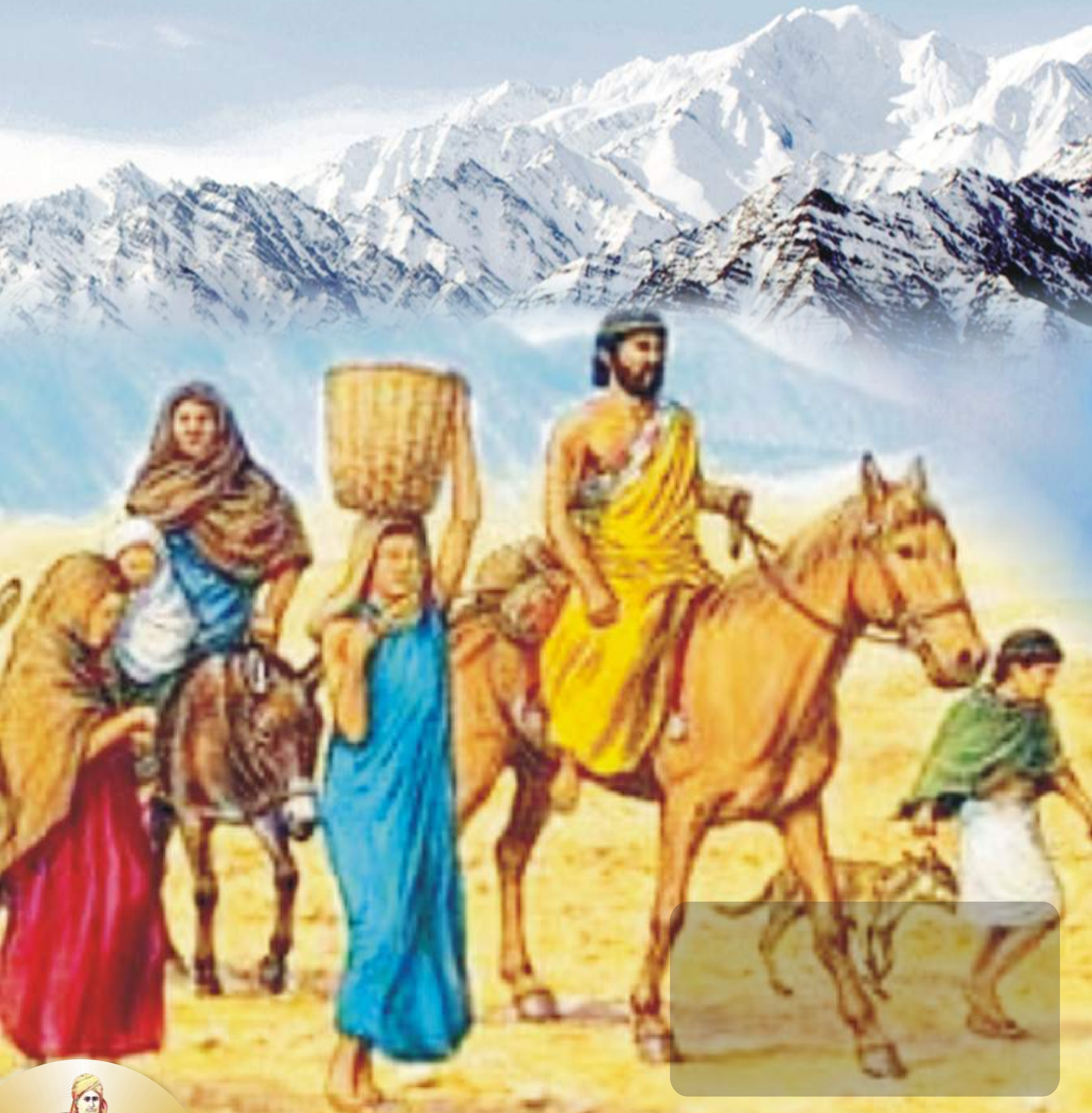

जब आर्य्य और दस्युओं में अर्थात् विद्वान् जो देव, अविद्वान् जो असुर उन में सदा लड़ाई बखेड़ा हुआ किया, जब बहुत उपद्रव होने लगा, तब आर्य्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जान कर यहीं आकर बसे। इसी से इस देश का नाम ''आर्य्यावर्त्त'' हुआ। - सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास पृष्ठ २२४

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर